आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 24 | उदयपुर सोमवार 01 जनवरी 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

लंगड़ा आम ही नहीं, दोहा भी

- डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी -

लंगड़ापन केवल पशु-पक्षी या मनुष्यों में ही नहीं होता। सब जानते हैं कि उत्तर भारत में आम भी लंगड़े होते हैं परन्तु बहुत कम लोगों को जानकारी होगी कि राजस्थानी भाषा में दोहे भी लंगड़े (खोड़े) होते हैं। जब किसी प्राणी की टांग टूट जाती है तो वह लंगड़ा या खोड़ा कहलाता है। आम कैसे लंगड़ा हो गया, इसका हमें पता नहीं परन्तु विदित है कि दोहे के चार चरण हुआ करते हैं और जब उसके चार चरणों में से एक चरण टूटा हुआ या खंडित हो तो वह 'खोड़ा दोहा' (लंगड़ा दोहा) हो जाता है। वैविध्यपूर्ण दुनिया में खोड़े दोहों की भी अपनी एक अनूठी छटा है जिसने काव्यकारों को तो आकर्षित किया ही है, साथ ही काव्य-रसिकों को भी कम रस-विभोर नहीं किया है।

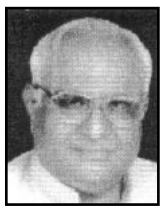

राजस्थानी में दोहा छन्द सर्वाधिक लोकप्रिय छन्द रहा है। छन्दों को वेदों का चरण भी कहा गया है - 'छन्दं पादौतु वेदस्य।' मध्ययुगीन राजस्थान में राजसभाओं में भाट-चारणों द्वारा जो विरुदावलियां गाई जाती थीं, उन्हें भी छन्द कहा जाता था। राजस्थानी का यह दोहा छन्द अपभ्रंश की अनमोल देन है। प्रख्यात हिन्दी विद्वान डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी का कथन है कि दोहा अपभ्रंश का लाडला छन्द है परन्तु अपभ्रंश की देन होते हुए भी यह प्राचीन राजस्थानी का एक विशिष्ट छन्द बन गया। कुछ लोगों की धारणा है कि दोहा छन्द 'डोई' नामक यूनानी छन्द का ही रूप है।

हिन्दी में दोहा छन्द के दो ही भेद मिलते हैं परन्तु राजस्थानी में इसके अनेक भेद बताए गए हैं। उनमें से एक भेद 'खोड़ा' भी है। 'रघुवन जस प्रकास' ग्रन्थ में जहां दोहों के 23 प्रकारों का उल्लेख है, वहां डॉ. ओमानन्द सारस्वत ने इसके 12 भेदों पर प्रकाश डाला है। राजस्थान के एक अन्य विद्वान मोतीलाल मेनारिया ने दोहों की पांच जातियों का विवरण दिया है। प्राचीन पिंगल ग्रन्थों में भी दोहों के 23 रूपों का वर्णन द्रष्टव्य है। सभी विद्वानों ने दोहों के भेदों में जो एक महत्वपूर्ण भेद बताया है, वह है खोड़ा दोहा यानी लंगड़ा दोहा।

राजस्थानी का खोड़ा दोहा जनप्रिय तो बहुत हुआ, परन्तु गंभीर रचना या ग्रन्थों के प्रणयन में इसका अत्यल्प प्रयोग ही हुआ लगता है। कारण यह कि यह एक श्रव्य छन्द रहने से ही रस-निष्पत्ति का आधिक्य होता है। फलत: खोड़े दोहे फुटकर रूप में ही मिलते हैं। अब राजस्थानी के लंगड़े दोहों की लाक्षणिकता प्रस्तुत की जाती है। सभी जानते हैं कि दोहों के चार चरण होते हैं। इस चौपाए के यदि तीन चरण सही सलामत हों यानी इसकी तीन चरणों में लक्षणानुसार मात्राओं की संख्या के अभाव में खंडित हो तो उसे खोड़ा दोहा कहा जाता है। इसमें मात्राओं की कमी भी निश्चित है। निश्चित संख्या से मात्राएं न अधिक हों और न कम अन्यथा उसे खोड़े दोहे की संज्ञा नहीं दी जा सकेगी।

खोड़े दोहे को यूं तो दोहे का एक प्रकार या भेद माना गया है, परन्तु वास्तव में देखा जाय तो यह सोरठा दोहे का एक रूप है। सोरठा दोहा ही खंडित होकर खोड़ा दोहा कहलाता है। चार चरणों वाले सोरठे के प्रथम चरण में ग्यारह, द्वितीय चरण में तेरह, तृतीय चरण में ग्यारह और चतुर्थ चरण में तेरह मात्राएं होती हैं।

खोड़े दोहे में लक्षण-विधान के अनुसार प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चरण के सोरठे के अनुरूप ही मात्राएं होती हैं परन्तु चतुर्थ चरण में सोरठे से भिन्न इसमें केवल चार मात्राएं ही होती हैं। अत: स्पष्ट है कि चौथे चरण में तेरह की जगह इसमें केवल चार मात्राएं ही होने के कारण इसे खोड़ा दोहा कहा जाता है।

डिंगल-पिंगल के एक उत्कट विद्वान संत बाबा ज्ञानसार द्वारा संवत् 1876 में रचित 'माला पिंगल' नामक छन्द शास्त्र में सोरठा दोहे का एक भेद 'खोड़ा' भी दर्शाया गया है। उक्त रीति-ग्रन्थ में खोड़े दोहे के लक्षण निम्न रूप से वर्णित हैं-

'पहले कीजै ग्यार,
तैरै ग्यारै दु तिय पद।'
चोथै मात्रा च्यार खोड़ीं....।।

खोड़े यानी लंगड़े दोहे का स्वरूप उपर्युक्त अनुसार होता है। चौथे चरण में केवल एक शब्द चार मात्राओं वाला। बाबा ज्ञानसार के ग्रन्थ 'माला पिंगल' में खोड़े दोहे का एक उदाहरण भी उपलब्ध है-

'करूणानिधान करतार,
जग सगलो जपै सुजस।
तार सकै तो तार,
(नीं तो) सरियौ....।।'

खोड़े दोहों के स्वरूप व कथ्य को देखने से इस बात की पुष्टि होती है कि इनका उपयोग निश्चय ही सामूहिक रूप में सुनने-सुनाने में होता रहा है। क्योंकि इसके प्रथम तीन चरणों में कोई बात, समस्या का प्रश्न प्राय: पहेली रूप में रहता है और चौथे चरण में उसका उत्तर या निष्कर्ष रहता है। संभव है, अमीर खुसरो की लोकप्रिय 'मुकरियां' खोड़े दोहों के प्रभाव की उपज हों। इसका विलोम भी संभव हो सकता है। जो भी हो, मुकरियां और खोड़े दोहों में गजब का सामंजस्य है।

राजस्थानी में खोड़े दोहे लिखे तो बहुत गए, क्योंकि इनका उल्लेख अन्यान्य जगहों पर मिलता है पर बहुधा फुटकर रूप में ही लिखे गये हैं। इस कारण यत्र-तत्र विकीर्ण हैं। बहुत कम ये प्रकाश में आए हैं। राजस्थानी के साहित्यान्वेशी विद्वान अगरचंद नाहटा को बीकानेर जैन ज्ञान भंडार में कतिपय खोड़े दोहे प्राप्त हुए थे जो फुटकर रूप में ही थे। इन दोहों की भाषा को देखने से ज्ञात होता है कि उनका रचनाकाल उन्नीसवीं शताब्दी होना चाहिये। उन दोहों में से कुछ को पाठकों के रसास्वादन हेतु यहां प्रस्तुत किया जा रहा है-

'नदिया झाझो नीर,
झूलण पैठो हेकलो।
अजै न आयो तीर,
(तो) डूबो....।।
आधो चड़ियो ऊंठ,
डगर मगर दोड़ावतो।
तटकै तूटो तंग,
(तो) पड़िया....।।
लोक आंवता कोय,
हरखै नार बहु हेज सूं।
दामो साटै होय,
(तो) नाचण....।।'

उपर्युक्त दोहों से यह स्पष्ट आभास होता है कि इनमें पहेलियां सी बुझाई गई हैं। चौथे चरण में जैसे उनका उत्तर बताया गया है। क्या ये अमीर खुसरो की 'मुकरियों' की याद नहीं दिलाते? उपर्युक्त प्रथम लंगड़े (खोड़े) दोहे को ही देखें। कहा गया है- नदी में अति वेगवान पानी है। कोई अकेला ही नहाने घुसा है। अभी तक वह किनारे पर नहीं आया है (तो इसका मतलब) डूब गया। स्पष्ट है कि प्रथम तीन चरणों में एक स्थिति का बयान किया गया है और चतुर्थ चरण में उसका निष्कर्ष बताया गया है।

खोड़े दोहों के बारे में बूढ़े-बुजुर्गों से चर्चा करने से पता चलता है कि खेतों-खलिहानों, गडाल-चौपालों में या अन्यत्र अवकाश के क्षणों में इनका कथन-श्रवण खूब चलता है। रैयाणों (महफिलों) या अन्य प्रसंगों में जहां लोग कुछ देर के लिए साथ बैठे नहीं कि खोड़े दोहों का दौर शुरू हो जाया करता था। सुनाने वाला इसके तीन चरणों को लय में सुनाने के बाद श्रोताओं से मुखातिब होकर प्रश्न मुद्रा में पूछता है- 'तो..।' श्रोतागण यदि अर्थ भांप लेते हैं तो एक साथ चौथा चरण बोल देते हैं, वही चार मात्राओं वाला कोई शब्द। यदि श्रोता निरुत्तर रहते हैं तो सुनाने वाला दोहे के तीन चरणों का पुन: पाठ कर एक रोचक शैली में चौथे चरण को प्रस्तुत कर देता है।

तहरीक का सर्वभाषायी अंक

-योगेन्द्र बाली-

हिन्दुस्तान में उर्दू को बड़ी शान से जिन्दा रखने वालों में जिनके नाम सुनहरे अक्षरों में लिखे जाने चाहियें उनमें एक महत्वपूर्ण नाम गोपाल मित्तल का होगा जिनकी 'तहरीक' नामक उर्दू पत्रिका ने न केवल उर्दू को गुटबन्दी से ऊपर रखने का महत्वपूर्ण अभियान चलाया बल्कि भारत की दूसरी जुबानों को भी उर्दू के सायबान तले जमा होकर प्यार, दुलार, मान-सम्मान और दोस्ती की फिजा में जीने और फलने-फूलने का सबब देने का प्रयास किया।

सन् 1978 में प्रकाशित 'तहरीक' का 800 पृष्ठों से अधिक का सिल्वर जुबली विशेषांक कई दृष्टियों से याद किया गया।

तहरीक के उस दस्तावेजी नम्बर में 90 से ऊपर उर्दू के शायरों की गजलें पेश की गई थीं। इसके अलावा 50 से अधिक अन्य भाषाओं की प्रतिनिधि कविताओं के रूपांतर भी थे। उर्दू और अन्य भाषाओं के बीच पुल बांधने का ऐसा सफल प्रयास पहले कम ही नजर आया था। यहां पेश हैं कुछ राजस्थानी लघुतम कविताओं के नमूने जिनका मूल से उर्दू में रूपांतर डॉ. फजल इमाम ने किया और जो उस तहरीक के नम्बर में प्रकाशित हुई-

(1)
पंजसाला मंसूबे
खाली हांडी में
आओ कागजी फसलें उगायें

(2)
बेरोजगारी
आओ चलें
काम दिलाने वाले (रोजगार) दफ्तर में
जाकर लम्बी-लम्बी लाइन में लड़ें भिड़ें
खुदा मफरूर और माजूर है

-ओंकार पारीक

(1)
तालीम
आज की तालीम
प्याज पर से छिलके उतारने के मानिंद है।

(2)
दुख
दुख
मीठा लगता है
और सुख तल्खियों की तरह काटता है

-डॉ. नरेन्द्र भानावत

उर्दू के अलाचा जिन अन्य भाषाओं के कवियों की रचनाएं उर्दू रूपान्तर में पेश की गई थीं, उनमें कन्हैयालाल नंदन की हिन्दी कविताएं सम्बन्ध ओर पूजा के फूल, देवेन्द्र सत्यार्थी की पंजाबी रचना परछावां, गुलाम नबी फिराक की कश्मीरी कविता अनजान नहीं हूं, रमाकान्त रथ की उड़िया कविता उड़ीसी, सरधा की तमिल कविता मीठी भाषा तमिल, मराठी कवियों बिन्दा करन्देकर की दांतों से दांतों तक, सदानंद रेगे की पुतलियां बुझ जाने के बाद, दिलीप पुरुषोत्तम चित्रे की बूंद में उतरा आसमान और अनुराधा पोद्दार की कसूर नहीं तेरा के उर्दू रूपांतर भी थे।

कन्नड़ के प्रतिष्ठित साहित्य सृजकों के.ह्वी. पुटात्पा, के. एस. निसार अहमद, सदलिंग देसाई और बी. प्रकाश की रचनाओं के रूपांतरों के अलावा सुरेश जोशी और सितांशु यितीशचन्द्र की गुजराती कृतियों, सत्यप्रकाश जोशी, मणि मधुकर, ओंकार पारीक, नरेन्द्र भानावत, नंद भारद्वाज, गोवरधन शेखावत, गोविन्द कल्ला, कन्हैयालाल सेठिया, तेजसिंह जोधा और पारस अरोड़ा की राजस्थानी रचनाओं के अलावा नवनीत सेन की बंगाली कविता कलकत्ता! मुझे अपनी बांहों में ले ले के उर्दू रूपांतर भी थे।

अन्य भाषाओं के जिन कथाकारों के अफसाने पेश किये गये थे उनमें अज्ञेय, धर्मवीर भारती, कृष्ण बलदेव, निर्मल वर्मा, कृष्णा सोबती, यशवन्त चताल, बिमल मित्र, अली मुहम्मद लोन, दीनापानी महन्ती, रामस्वरूप अनखी और गुरदयाल सिंह की रचनाएं भी शामिल थीं। जिन उर्दू समीक्षाकारों की समीक्षाएं इस ऐतिहासिक अंक में शामिल थीं।

उर्दू नज्म के शायर कृष्ण मोहन, खलीलउलरहेमान आज्मी, बलराम कोमल, वजीर आगा, मुहम्मद अलवी, हसन नईम, बशर नवाज, शहरयार, साजिदा जैदी, हमी अल्मास, राशद आजर, आमना अबुलहसन, अख्तर बस्तबी, शाहीन बदर, रशीद अफरोज, अब्दुल्ला कमाल, डॉ. जरीना सानी, साहिल अहमद, हामिद अकमल, जफर अहमद, यूसुफ जमाल, शाहीद कलीम, चन्द्रभान ख्याल, जब्बार जमील, खलील तनवीर, मुश्ताकअली शाहीद, माहिर मंसूर, अब्दुल कादर अदीब, मख्मूर सईदी और गोपाल मित्तल की नज्में शामिल थीं।

-शेष पृष्ठ सात पर

स्मृतियों के शिखर (43) : डॉ. महेन्द्र भानावत

वाणी साधक-सिद्धक प्रहलादजी शर्मा

वाणी का महत्व सर्व विदित है। अच्छी और उत्तम वाणी बोलकर बड़े ऊंचे चमत्कारी काम होते देखे गये हैं। अधिकांश रगड़े-झगड़े, मनमुटाव, दंगा-फसाद के मूल में वाणी मुख्य कारण रही है। बड़े-बड़े युद्ध और महायुद्ध वाणी के कारण लड़े गये। इस वाणी की आधार शिला जबान है। इसका निवास मुख के भीतर है। बत्तीस-बत्तीस दांतों के कड़े पहरे में रहकर भी इस जबान ने कमाल किये हैं, पर कबाड़े भी कम नहीं किये हैं। इसके द्वारा किये गये अनर्थों की सूची बड़ी लम्बी है।

ऐसी वाणी के साधक और सिद्धक बड़ी मुश्किल से मिलते हैं। जो भाखणी भाखते हैं, भविष्य कथन करते हैं वे असाधारण होते हैं। ऐसे असाधारण पुरुषों में प्रहलादजी शर्मा एक हैं जो साधारण में भी अति साधारण ही लगे।

प्रहलादजी राजस्थान के कोटा जिले के बड़ोद कस्बे के रहने वाले हैं। यह कस्बा कोटा से 60 किलोमीटर दूर है। यहीं इनका वाणी धाम है जहां ये आये-गयों की समस्याओं एवं पूछताछ का समाधान देते हैं। आप जितने प्रश्न पूछना चाहें पूछते जाइये, वे फटाफट उनका उत्तर देते जायेंगे। अपने परिजनों, सगे-समधियों या अन्यों से संबंधित प्रश्नों के लिए उनका फोटो ले जाना जरूरी है।

4 सितम्बर 2002 को मैंने वाणी धाम की यात्रा की। साथ था ट्रायबल रिसर्च इंस्टीट्यूट (टी.आर.आई.) के निदेशक एस. एल. पालीवाल और संग्रहालय प्रभारी भगवान कछवाह का। दरअसल हम लोग शाहाबाद जा रहे थे आदिवासी जनजाति सहरियों के अध्ययन के लिए। टी.आर. आई. से प्रकाशित त्रैमासिक 'ट्राईब' के जनजातीय कला-संस्कृति विशेषांक हेतु यह अध्ययन यात्रा थी। इस अंक विशेष के अतिथि सम्पादक के रूप में पालीवालजी ने मुझे जोड़ा।

सुबह कोई दस बजे हम बड़ोद पहुंचे। वाणी धाम के बाहर चबूतरे पर प्रहलादजी ऐसे मिले जैसे हमारी ही प्रतीक्षा कर रहे हों। उन्हें हमारी कोई सूचना नहीं थी। चाय, नमकीन, मिठाई से हमारी आवभगत हुई। फिर सौम्य प्रहलादजी आये और अपने भीतरी कक्ष में जाकर बैठ गये। इशारे से हम भी चले गये। उनके हाथ में एक डायरी थी। उसे खोल अध झुके-से उस पर आंखें गड़ाये हमें इशारा दिया।

हम बारी-बारी से उनके समक्ष बैठते रहे और प्रश्नों के उत्तर पाते रहे। मेरा यह पहला मौका था, जबकि पालीवालजी पहले आ चुके थे। स्वाभाविक था, उनके प्रश्न अधिक थे। मैं यदि उस भाव-भूमि से परिचित होता, तो मेरे प्रश्न भी कई अधिक होते, खासतौर से लेखन संबंधी। अस्तु।

मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। प्रहलादजी पर कौन सी ऐसी दिव्य शक्ति महरबान है, जिसके कारण ऐसा चमत्कार देखने को मिला। मेरी जिज्ञासा बढ़ती गई। समाधान पाये बिना वहां से चलने का मन नहीं कर रहा था। बातों का सिलसिला चला तो ऐसा चला कि हम आत्मीयता की एक डोर में बंध गये। मैंने अवसर देख प्रश्न करना शुरू कर दिया।

प्रश्न : सारे प्रश्नों के उत्तर इस डायरी से बिना पन्ना पलटे कैसे दे देते हैं?

उत्तर : डायरी तो मात्र माध्यम है। उसमें कुछ लिखा नहीं है। सामने हरे-पीले अक्षर आते रहते हैं, जिससे मैं पढ़ दिया करता हूं।

प्रश्न : यह दिव्यता कैसे प्राप्त हुई?

उत्तर : मैं कक्षा ब में पढ़ता था। पढ़ने में कमजोर था। पाठ याद नहीं होता, तब मास्टरजी पीटते थे। कार्तिक पूर्णिमा को इन्द्रगढ़ के पास कुंवालजी कोलेश्वर महादेव का मेला भरा। उसमें मैं भी गया। रात को बहुत ठंड लगी। वहां एक महात्मा तपस्या कर रहे थे। मैं उनके पास जाकर तापने लगा और उनके पांव दबाने लगा। रात को बारह बजे उन महात्मा ने मुझसे पूछा- 'क्या चाहते हो?' मैं बोला, 'क्लास में, पाठ याद नहीं रहता सो मास्टरजी पीटते हैं। माड़साब जो पूछें सामने आ जाय।'

प्रश्न : फिर क्या हुआ?

उत्तर : उन महात्मा ने कहा कि सुबह इस कुण्ड में जाकर नहाना। वहां महादेव की मूर्ति मिलेगी। तुम महादेव को ही गुरु मानना और किसी को गुरु मत बनाना। वे शिव हैं।

प्रश्न : फिर आपने क्या किया?

उत्तर : मैंने रात भर सोचा कि मेले में सैकड़ों आदमी आये हैं। मुझे ही ऐसी बात क्यों कही। मैं सुबह उस कुण्ड में नहाने गया। नहाया। वहां फूल का गुच्छा मिला। महादेवजी की मूर्ति मिली। जो मंत्र बताया 'नम: शिवाय' पढ़ा।

प्रश्न : कोई चमत्कार हुआ?

उत्तर : जबरदस्त चमत्कार तो यही हुआ कि पाठ याद हो गया- 'चलबे घोड़ा सरपट चाल / दो दिन में पहुंचे बंगाल। कलकत्ते की काली देखी / हुगली नदी निराली देखी।'.... यह कविता थी। कक्षा में माड़साब ने पूछी तो मैंने पूरी सुना दी। सारे लड़के मेरी ओर देखते रह गये।

प्रश्न : मास्टरजी की मन:स्थिति कैसी रही?

उत्तर : मास्टरजी अचम्भे में पड़े कि हमेशा मार खाने वाले इस छोकरे को क्या हो गया है। उन्होंने कई प्रश्न पूछे। मैंने सबके उत्तर दिये और कहा कि जितने चाहो पूछो। वे मास्टरजी सब मास्टरों को बुला लाये। सबने मेरी अच्छी क्लास ली। वे जो मरजी आये पूछते, मैं सबका तत्काल उत्तर देता।

प्रश्न : फिर क्या बीती?

उत्तर : हालत खराब हुई। यह कि मास्टरों ने समझा कि छोरे को भूत लग गया है। नुगरी हवा लग गई है। दिमाग बिगड़ गया है। जिसने जो समझा कहा। बात सब ओर फैल गई। कलेक्टर आये। उनको मैंने बताया कि फलाणी फाइल में आपने जो नोट लगाया, वह गलत है। उन्हें कई तरह की मैंने और भी जानकारी दी। वे मेरी ओर देखते रह गये। उन्होंने मेरे लिए 'स्टेटमेंट' दिया कि यह ईश्वरीय चमत्कार है।

प्रश्न : फिर तो धाम ही चल पड़ी होगी?

उत्तर : वह तो होना ही था। चमत्कार को नमस्कार सभी करते हैं। उन महात्मा ने तीन बातों का ध्यान रखने को कहा था, जिनकी रक्षा मैं अभी भी कर रहा हूं।

प्रश्न : वे कौन -कौन सी?

उत्तर : (1) किसी से पैसा कौड़ी कुछ न लेना (2) मान-सम्मान, माला आदि से दूर रहना (3) गरीब-अमीर को बराबर समझना।

प्रश्न : पढ़ाई का क्या हुआ?

उत्तर : पांचवीं तक ही पढ़ पाया। आगे योग ही नहीं था।

प्रश्न : लोग काफी उमड़ते होंगे?

उत्तर : मैंने वैसे दिन तै कर रखे हैं। हर माह की 27 तारीख और हर शनिवार। इस दिन भारी भीड़ रहती है। पांच से 15 हजार भी आ जायें तो कोई निराश नहीं लौटता। सुबह से बैठक होती है, देर रात तक।

प्रश्न : ऐसी स्थिति में तो पूरी दुनिया उलट जानी थी।

उत्तर : यहां वे ही लोग आ सकते हैं, जो रामराज्य में रहे या कृष्ण के साथ रहे। शेष आ भी रहे होते हैं तो टल जाते हैं।

प्रश्न : कोई विशेष घटना घटित हुई?

उत्तर : इन्दिराजी गांधी आईं। पूछा कि मेरे शासन की अंतिम 'डेट' क्या होगी। मैंने बता दी। उसी दिन उनकी 'डेथ' हो गई थी। बाद में लोग आये। पूछा तो मैंने कहा कि मुझे जो पूछा उसी का जवाब दिया था। यह इतर बात है कि प्रधानमंत्री रहते-रहते उनका निधन हो गया।

प्रश्न : और कोई अजूबी घटना?

उत्तर : विदेशी लोग एड्स-कैंसर पर अधिक पूछते हैं। अमेरिका का अध्ययन दल आया। उसने मेरे सिर पर मशीन रख जानना चाहा कि मेरे मस्तिष्क में क्या विशेषता है जिसके कारण मैं यह सब बताता हूं।

- शेष पृष्ठ सात पर

पत्र-पिटारी

शब्द रंजन शब्दों का पुलिन्दा नहीं

जीवन पथ पर गतिमान रहते हुए मुझे ऐसे कई स्वनाम धन्य लोगों से मुखातिब होकर उनके शुभाशीष से आप्लावित होने के अवसर मिलते रहे जिसके चलते मैं अपने पथ को घुप्प तिमिर में भी आलोकित पाता हूँ। मिलने-बिछुड़ने की इस श्रृंखला में शामिल है गत वर्ष दिसम्बर माह की एक मुलाकात, सांस्कृतिक विविधता और विशिष्टिता के धनी, झीलों के शहर के रूप में विख्यात उदयपुर शहर में लोक के चितेरे साहित्यसाधक डॉ. महेन्द्र भानावतजी से।

यह एक ऐसा नाम जिन्होंने राजस्थानी लोककला, संस्कृति व साहित्य को साहित्य फ़लक पर एक नई पहचान दिलवाने के लिए राजस्थान के कोने-कोने छानकर लोक से जुड़े हर एक पहलू का तर्क, तुलना, विवेचना व विश्लेषण की कसौटी पर बौद्धिक समृद्धि दी। साथ ही नये कलेवर के साथ साहित्य-समाज के सुधीजनों तक पहुँचाने का भगीरथ प्रयास किया।

उदयपुर जाना तो मेरा एक शिक्षक के रूप में अपने विभागीय प्रशिक्षण के लिए हुआ। विभागीय प्रशिक्षण की सफलता के साथ-साथ मेरे वैयक्तिक जीवन के लिए भी यह एक सफ़ल सफ़र रहा।

उल्लेखनीय है कि संस्कृति मंत्रालय के विभिन्न कार्यक्रमों में से एक कार्यक्रम शिक्षक प्रशिक्षण से सम्बंधित भी है। इसमें देशभर के विभिन्न क्षेत्रों से शिक्षा व संस्कृति की समझ रखने वाले शिक्षक मंत्रालय द्वारा गोहाटी, हैदराबाद, उदयपुर व नई दिल्ली में स्थापित सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्रों में प्रशिक्षण प्राप्त करने जाते हैं। प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकगण प्राप्त कौशलों व दक्षताओं का उपयोग कक्षा कक्ष में करते हुए न केवल शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को रोचक बनाते हैं बल्कि अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशिष्टता के प्रति देश के नौनिहालों के मन में भी सम्मान का भाव पैदा करते हैं। संयोगवश मुझे 'शिक्षा में पुतलीकला की भूमिका' विषय पर 14 से 29 दिसम्बर 2016 तक उदयपुर में आयोजित कार्यशाला में प्रतिभागी बनने का अवसर प्राप्त हुआ।

प्रशिक्षण अवधि में देश के 18 राज्यों के विभिन्न विधाओं के धनी शिक्षक साथियों की प्रतिभा से रू-ब-रू होने के अतिरिक्त उनकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशिष्टता को जानने व समझने का भी मौका मिला। कार्यशाला मूलत: 'शिक्षा में पुतली कला की भूमिका' विषय पर केन्द्रित थी। इसी कार्यशाला में 26 दिसम्बर को लोकसाहित्य सम्बंधी विषय पर व्याख्यान हेतु डॉ. भानावतजी का आगमन हुआ। संयोजिका श्रीमती ज्योति सक्सेना ने डॉ. भानावतजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में जो परिचय दिया उससे सभी प्रतिभागी दंग रह गये।

डॉ. भानावतजी का व्याख्यान सुनते हुए घड़ी की सुइयां कितनी जल्दी एक घंटे के सफ़र को पूराकर गई, पता भी नहीं चला। लोक का इतना गहन अध्ययन, प्रस्तुतिकरण का ढंग, जीवन की सादगी व शालीनता का प्रभुत्व सबको अचंभित कर गई। सत्र समापन पर डॉ. भानावतजी से अतिथि कक्ष में मिला। जिस आत्मीयता व स्नेहिलभाव से उन्होंने मुझे अपने पास बिठाकर बातचीत का सिलसिला शुरू किया तो उनकी महानता पहली ही नज़र में स्पष्ट हो गई। मैंने अपनी पुस्तक 'रवाँई क्षेत्र के लोकदेवता एवं लोकोत्सव' उन्हें भेंट की। उन्होंने मेरी पीठ थपथपाते हुए मुझे इस दिशा में निरन्तर आगे बढ़ने को प्ररित किया और कहा कि मैं इसे जरूर पढ़ूंगा और पढ़कर इस पर लिखूंगा भी। उनकी इस बात पर मुझे यकीन नहीं हुआ। कारण कि ऐसा अक्सर अधिकांश लोग कहते ही हैं, परन्तु बाद में वे भूल जाते हैं।

29 दिसम्बर को कार्यशाला की समाप्ति पर उदयपुर की कई अमिट यादें लिये मैं अपने घर लौट आया। इसी बीच विद्यालय में शीतकालीन अवकाश हो गया। 15 जनवरी को विद्यालय पहुंचा। एक दिन अचानक मेरे पास फोन आया जिसे सुनकर मुझे सहसा यकीन नहीं हुआ। आवाज थी- 'मैं उदयपुर से भानावत बोल रहा हूं। मैंने आपकी पूरी पुस्तक पढ़ ली और उस पर लिखा भी है जो शब्द रंजन में छपा है। आप बताइये, यह समाचार पत्र किस पते पर भेजूं।

कुछ ही दिन बाद डाकिया उक्त समाचार पत्र को मेरे हाथों में थमा गया। पुस्तक की समीक्षा पढ़कर मन में प्रसन्नता तथा डॉ. भानावतजी की महानता मेरेचेहरे से ही परिलक्षित होने लग गई। उनका यह कार्य मुझे इस रूप में भी प्रेरित करता है कि कोई भी व्यक्ति सामान्य से हटकर विशिष्ट की पंक्ति में यूँ ही खड़ा नहीं होता। 'शब्द रंजन' शब्दों का पुलिन्दा नहीं बल्कि लोकांचलों में व्याप्त उस ज्ञान-सम्पदा से भी समृद्ध कर यह प्रेरणा देता है कि व्यक्ति अपने जीवन-व्यवहार से बालकों के शिक्षण का उपयोगी हिस्सा बनायें। भारतीयता की सही और सच्ची पहचान के लिए लोक और वहां के जन ही एकमात्र विकल्प हैं।

- दिनेश रावत, पिथौरागढ़

पाण्डुलिपि पुरस्कार - मित्र-मैत्री का दरसाव

शब्द रंजन के 15 दिसम्बर के अंक में प्रकाशित 'पाण्डुलिपि पर सर्वोच्च पुरस्कार' खबर कई विचारों के सेतु खोलती है। लगता है, डॉ. प्रकाश आतुर ने मित्र-मैत्री का ही निर्वाह किया है अन्यथा ऐसा करना उनके स्वभाव में भी नहीं था। यह अलग बात है कि नंद चतुर्वेदीजी इस पुरस्कार के सर्वथा योग्य थे। ऐसा होता है, होम करते कभी-कभाक हाथ जलने की नौबत आ जाती है। प्रो. नवलकिशोर ने गम्भीर आलोचक की भूमिका नहीं निभाई। फिर वे तो नंदजी के अन्तरंग मित्रों में थे। थोड़ी सब्र से काम लेते तो स्वयं भी गरिमावान बने रहते। अकादमी अध्यक्ष के नाते प्रकाशजी ने डॉ. भानावतजी के प्रस्ताव को स्वीकार करते कोई देर नहीं होने दी, इससे उनकी शालीनता बनी रही। अस्तु।

- डॉ. राधेश्याम, सागर

खोज-खबर

जीत्याजी जीत्या टोडरमल वीर

कोई चरित्र इतना महत्वपूर्ण होता है कि उसका इतिहास तो नहीं बनता किन्तु उसका नाम लोककंठों पर रसिकता के साथ संस्कारवत् सुनाई देता है। टोडरमल को ही लें। कौन है यह टोडरमल। हरियाणा से लेकर राजस्थान, मध्यप्रदेश, ब्रज तक में यह नाम विविध प्रसंगों पर मुख्यत: महिलाओं में मधुर गायकी बना हुआ है।

अकबर के नौ रत्नों में एक टोडरमल था। बीरबल भी था। बीरबल बड़ा किस्सेबाज और हाजिरजवाबी के लिए मशहूर था जिसके नाम पर लोगों में कई हंसी-ठिठोलीपरक किन्तु प्रतिभामूलक चातुर्य देते किस्से कथन मिलते हैं। टोडरमल के जिम्मे वित्त तथा माल जैसे विभाग थे। इस कारण उसकी दौड़ा-दौड़ी पंजाब, सिंध, कश्मीर तक होती रहती। जहां भी वह जाता, उसकी छाप छूटती। इसीलिए उसकी यादगीरी गीतों में सुनने को मिलती है। कई घटनाएं भी उसकी साख भरती मिलती हैं। एक मजेदार किस्सा इस प्रकार है।

कहते हैं, नारनोल के एक सेठ-परिवार से टोडरमल का गहरा परिचय हो गया। वहां उसका आना-जाना-ठहरना होता। एक समय तीन साल पश्चात जब टोडरमल पहुंचा तो पता चला कि सेठ का निधन हो गया और नौकर-चाकर मुनीम ने मिल उसकी सारी सम्पत्ति बर्बाद कर दी जिससे परिवार अनाथ बन गया था।

सेठ के पन्द्रह वर्ष का लड़का था जिसकी सगाई कर रखी थी। लड़की वाले जान गये कि सेठजी के बाद उनके घर की हालत खस्ता हो गई है। ऐसी स्थिति में बालकी का विवाह करने योग्य घर नहीं तो वर भी नहीं रहा किन्तु लोकलाज के मारे मना भी नहीं किया जा सकता। अत: उन्होंने बतौर परीक्षा सुपारियों से भरा एक मोटा थाल भेजा और कहलवाया कि बरात में जितनी सुपारियां हैं उतने बराती तथा अधिक नहीं तो भी दो हाथी तो आने ही चाहियें।

सेठानी बड़ी समझदार थी। उसे समझते देर नहीं लगी। सुपारियां मुजब बराती होंगे तो उनके साथ शोभित होते सजेधजे ऊंट, रथ, तामजाम और भोजन-पाणी, लाव-लश्कर भी चाहिये। यह सब कैसे संभव होगा। वह चिन्ता में पड़ गई। उन्हीं दिनों टोडरमल का वहां पहुंचना हो गया। सेठानी उसकी मुंहबोली बहिन थी सो सारी कहानी कह सुनाई।

टोडरमल ने बड़े धैर्य के साथ सेठानी की बात सुन भरोसा दिलाया कि विवाह की सारी जिम्मेदारी मुझ पर छोड़ दी जाय। वह अपने भानजे का विवाह ऐसा करेगा कि लोग याद करते रहेंगे और सेठजी की भी जय-जयकार होती रहेगी। टोडरमल ने बादशाह को जाकर पूरा वृतांत कह सुनाया। बादशाह ने टोडरमल की चाह के अनुसार विवाह करने की पूरी छूट दे दी। फलत: दरबार से पचास हाथी, पांच सौ घोड़े, हजार रथ, बैंड और तोपों की व्यवस्था कर ली गई।

नारनोल जाकर टोडरमल ने लाखों रुपयों का भात भरा। अपनी धर्म बहिन सेठानी के लिए मोतियों का जड़ाव जड़ी चूंदड़, बनड़ा-बनड़ी के लिए बेशकीमती गहनों, कपड़े-लत्तों का ढेर कर दिया। बड़े-बड़े राजा-रईशों को विवाह में आमंत्रित किया। दो हजार बराती, हजार नौकर-चाकर, सईस, महावत, रसोड़ची, गाने-बजाने-नाचने वाले कलाकार तथा बाइयां बुलाई गई।

रईशों में राजा मानसिंह, बीरबल, अब्दुल रहीम खानखाना जैसे नवरत्नों को टोडरमल के साथ ऐसी अकल्पनीय शाही ठाठ ठसक वाली बरात के बारे में सुन बनड़ी के पिता की जमीन खिसक गई। पश्चाताप से अरा-भरा मारे शर्म के वह टोडरमल के पास पहुंचा और अपनी पगड़ी उसके पांवों में रख दी। बोला, मेरे सारे कसूर माफ हों। मैं मुंह बताने योग्य नहीं रहा। धड़ाधड़ आंसू फफकाते बोला, 'मैं नगर छोड़ जा रहा हूं। कन्यादान मेरा भाई कर देगा।'

यह सुनते ही टोडरमल का हृदय भर आया। उसने बनड़ी के पिता नगर सेठ को छाती से लगाया। सान्त्वना दी और कहा कि सारी व्यवस्था मैंने पहले से कर रखी है। आपको कुछ नहीं कर केवल विवाह में उपस्थित रहना है। आपकी इज्जत सवाई होगी। चिन्ता न करें।

यह बात पूरे नगर में हवा की तरह फैल गई। सजीधजी बरात पहुंची। पूरा शहर उमड़ पड़ा। स्वागत में महिलाओं ने गीत गाया-

ए तो जीत्याजी जीत्या
म्हारा टोडरमल वीर
केसरिया बनड़ी जीती
म्हारै वीरै जी रै पाण।

चंवरी में यही कारण है कि जब भी किसी महिला के घर विवाह मंडता है, वह टोडरमल जैसे भाई की कल्पना कर फूली नहीं समाती है। वर-वधू को खेलाते समय भी जीतने वाले पक्ष के लिए 'टोडरमल जीत्या' और हारने वाले के लिए 'ढेड़ांरा हार्‌या' कहा जाता है। ब्रज में तो बच्चे को पालने में हलराते-झुलाते जो हालरिया गाया जाता है उसमें झुलने वाले बच्चे को ही टोडरमल की उपमा दी जाती है- 'टोडरमल हींडै पालणै।' ऐसे और भी अनेक संकेत देते गीतों के संदर्भ मिलते हैं जिनके पीछे की कथा, घटना, प्रसंग को खोजने की आवश्यकता है।

खोज-खबर

वेश्या की लाख मोहर की बावड़ी

भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा का नाम फड़ चित्रकारी के लिए तो देश-देशान्तर में प्रसिद्ध है। सन् 1982 की फरवरी में पहली बार मैं पड़ चित्रकारी के अध्ययन-अन्वेषण के लिए गया था, तब घींसूलालजी जोशी से मिलना हुआ था और बहुत सारी जानकारी प्राप्त कर राजस्थान की इस महत्वपूर्ण चित्र-पटावली और इससे जुड़ी गाथा-गायकी पर लिखा था। तब यह अन्दाजा नहीं था कि आने वाले समय में यह विधा इतनी ख्यात-प्रख्यात हो जायेगी कि दुनिया की निगाह अपनी ओर खींचेगी।

घींसूलालजी के निधन के बाद इस विधा में नामवरी करने वाले दुर्गेशजी और शान्तिलालजी से मिलना चाहा। दोनों भाइयों ने अपने पिता के पदचिन्हों पर चलकर फड़ चित्रकारी के क्षेत्र में न केवल विशिष्ट पहचान दी अपितु राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त किया। दुर्गेशजी उस दिन वहां नहीं थे। शान्तिलालजी से बड़ी देर तक फड़ चित्रकारी के अतीत-वर्तमान को लकर भविष्य कथन होता रहा।

शान्तिलालजी को इस बात पर बड़ा गुस्सा था कि फड़ कला के बारे में बहुत सारी जानकारी तो खोटी दी जा रही है। फिर उनके परिवार वालों के योगदान को भी जिस ढंग से व्यक्त किया जाना चाहिये, वह नहीं किया जा रहा है।

मैंने उन्हें यही कहा कि फड़ चित्रकारी के काम में जो लोग लगे हुए हैं, उन्हीं को पूरी जानकारी नहीं है और हर व्यक्ति जब अपने को ही बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करता है तब अध्येता यह जान नहीं पाता है कि वस्तुत: कौन सही और प्रामाणिक है। जब से फड़कारी कला व्यावसायिक बनी है तब से भ्रांतियां ही अधिक फैली हैं। उन्होंने अपनी यह कला, शाहपुरा की उन्हीं के परिजनों जोशी गोत्र के छींपों की देन बताया और कहा कि इसके पीछे सात सौ वर्षों का इतिहास है।

शान्तिलालजी ने यह भी कहा कि चित्तौड़ में रह रहे रामगोपाल जोशी ने इस फड़ कला को पांच सौ वर्ष पुराना मानकर उनके पुरखों से जो सम्बन्ध जोड़ा, वह भ्रांतिमूलक है। रामगोपाल हमारी गोत्र के नहीं हैं। वे डिग्गीवाल गोत्र के नामदेव छींपा समाज के हैं।

आजादी के बाद हमारे देश की बहुत-सी कला-विधाएं अपनी परम्परा से ही चिपकी रहने के कारण अपने अस्तित्व से भी हाथ धो बैठीं। फड़ कला के साथ भी यही होता यदि इसमें नये प्रयोग नहीं होते। यह अच्छा रहा कि दुर्गेशजी-शान्तिलालजी दोनों भाइयों ने परिवर्तित होते माहौल में निराशा को ग्रहण करने की बजाय आशाजनक साहस दिखाया और फड़ चित्रकारी को बाहरी हवा दी।

लोगों ने इस कला की उत्कृष्टता पहचानी और आज तो यह पट्ट चित्रावली साड़ियों के बोर्डर, बेडशीट, टाई, कमीज तक में दृष्टिगोचर हो रही है। अब यह सज्जा की, शोभा की, संग्रहालय की मूल्यवान धरोहर बन गई है। इसी शाहपुरा में एक महत्वपूर्ण जानकारी यह मिली कि यहां के महाराणा उदयपुर महाराणा के साथ अपने अच्छे यादगार सम्बन्ध रखते थे। महाराजा उम्मेदसिंह प्रथम मराठों के खिलाफ लड़े और उदयपुर महाराणा का बड़ा साथ दिया। इनकी चमना नामक वेश्या खास मरजीदान थी जो उदयपुर की थी। शाहपुरा के राजकाज में भी इसकी बड़ी दखल थी। एक बार इसने महाराजा से यह इच्छा जाहिर की कि उसे एक लाख मोहरें देखने को मिले। महाराजा के पास भी इतनी मोहरें नहीं थी तब वहीं के एक सेठ से यह व्यवस्था कराई गई।

चमना एक लाख मोहरें देख बड़ी खुश हुई। महाराजा ने मोहरें सेठ को लौटानी चाही, पर सेठ ने यह कह लेने से मना कर दिया कि उन्हीं के राज में, उन्हीं के प्रताप से ये कमाई गई हैं। अत: हुजूर की चीज हुजूर को ही शोभा देती है। महाराजा ने चमना को ही ये मोहरें वापस करा दी।

चमना बड़ी होनहार महिला थी। उसने तो केवल मजाक रूप में इतनी मोहरें एक साथ देखने की जिज्ञासा भर की थी। जब मोहरें उसे वापस की गई तो उसने इन्हें वहीं की जनता के लिए खर्च करने की सोचकर एक बड़ी ही कलात्मक बावड़ी बनवाई जो 'चमना बावड़ी' के नाम से आज भी उसकी यादगार लिए है। इन मोहरों में से बहुत सारी बच गई, तब चमना ने अपनी दासी राधा के नाम से एक बावड़ी 'राधा बावड़ी' बनवा दी।

यहां के नरेन्द्रसिंह वीरानी ने मुझे शाहपुरा के कलात्मक एवं सांस्कृतिक वैभव की जानकारी देते हुए बताया कि इतिहास में बहुत सारी बातों का उल्लेख नहीं होने के कारण अच्छे पढ़े-लिखे लोग भी कंठ बैठी बातों को महत्व नहीं देते हैं जबकि इतिहास से भी अधिक जीवन्त और सच्चाई का पुट बातों में सुनने को मिलता है। यहीं वीरानियों के भैरुजी का रातिजगा था।

मुझे उदयपुर से दलपतसिंहजी, राजेन्द्रजी वीरानी ले गये। वहां भैरुजी के थानक पर चतुरासिंह वीरानी (88) ने बताया कि लगभग तीन सौ वर्षों से यहां भैरुजी का थानक है। शादी से पूर्व यहां वीरानी भाई जात देते हैं। इसमें सवा किलो आटे के बने चंदकिये (रोट-रोटले) भैरुजी को चढ़ाने पड़ते हैं। शादी के बाद ढाई किलो के चंदकिये चढ़ाने का दस्तूर है।

इन भैरुजी का मुख्य स्थान मालपुरा है। विजयनगर के राजेन्द्र को वहां के भैरुजी आते हैं। यहां भी उन्हीं को भाव आ रहा था। बड़ी संख्या में वीरानी परिवार के स्त्री-पुरुष यहां एकत्र थे। यहीं अखिल भारतीय वीरानी महासभा की कार्यकारिणी की बैठक भी हुई।

महासभा द्वारा देश-विदेश में रह रहे वीरानी परिवारों की जानकारी प्राप्त कर स्मारिका प्रकाशन का निर्णय लिया गया और उदयपुर में महाअधिवेशन करने का निश्चय किया गया। वर्ष भर पूर्व ही वीरानी परिवार की सुध लेने का दायित्व मालपुरा में उदयपुर के दलपतसिंहजी वीरानी ने लिया था।

- म. भा.

साहित्य संस्थान की टी क्लब

राजस्थान विद्यापीठ के साहित्य संस्थान में मैंने सन् 1964 से 1967 तक अपनी सेवाएं दीं। प्रारम्भ में कविराव मोहनसिंह, सौभाग्यसिंह शेखावत जैसे लब्धनिष्ठों का सान्निध्य मिला। फिर नन्दकिशोर शर्मा, बिहारीलाल व्यास आये। नन्दकिशोरजी लिपिकार थे। बिहारीलालजी तुकबंदीकार और कई तरह के आंकड़-बांकड़ संस्मरण लिये थे।

बाद में उमाशंकर शुक्ल, सांवलदान आशिया, अर्थटेंट हीरालाल, कृष्णचन्द शास्त्री के साथ हमारी हमजोली बनी थी। दो बजे करीब हमारी चाय चुस्त क्लब थी। इसमें डायरेक्टर डॉ. मोतीलाल मेनारिया तथा अध्यक्ष योगेशचंद्र शर्मा थे। इनकी चाय सेवादार मेघराज उनके पास पहुंचाता था। एक-एक कप चाय के हिसाब से ही सबकी चाय बनती थी। एक दिन थोड़ी शक्कर कम पड़ गई। डॉ. मेनारियाजी को एक चम्मच अतिरिक्त शक्कर के साथ चाय उनके कक्ष में पहुंचानी होती थी। सभी सोच में पड़ गये। तत्काल व्यवस्था संभल नहीं रही थी। मैंने सुझाव दिया कि अधिक विचार विमर्श करने की बजाय अच्छा तो यही रहेगा कि प्रतिदिन की तरह ही चाय में चम्मच हिलाता हुआ मेघराज डाक्टर साहब को चाय दे आये। यह बड़ी हिम्मत का और उतना ही रिस्की काम था। हमने मेघराज को हिम्मत बंधाई और वह अपनी इस बहादुरी में विजयी रहा। डाक्टर साहब ने सदैव की तरह चाय पीने का आनंद लिया। तब मैंने पाया कि साहित्य में भी मनोवैज्ञानिक समझ का बड़ा महत्व है।

दूसरी घटना इससे भी मजेदार है। एक दिन अध्यक्ष योगेशजी से कोई सज्जन मिलने आये। योगेशजी के लिए चाय हमने उनके कक्ष में पहुंचवा दी थी मगर जो सज्जन आये उनके लिए भी चाय जरूरी थी। योगेशजी घंटी बजाते रहे। हम समझ गये पर हमारी मजबूरी थी। सब अपनी-अपनी चाय पी रहे थे। एक्स्ट्रा चाय हो तो पहुंचे। मेघराज नाना-नाना हो रहा था। मैंने कहा, अध्यक्षजी को मालूम है कि चाय सबके लिए एक-एक कप ही बनती है तो दूसरा कप कहां से आयेगा। अच्छा हो, वे बाहर से मंगवा लें। इतने में योगेशजी भरे गुस्से में आये और मेघराज के बहाने हमें भी बहुत कुछ सुनाते रहे। मैंने जब उनका अति पावर देखा तो ठंडेपन से कहा, सर, चाय है कहां सो भेजते। आपके इस तरह से बरसने से चाय बरसने वाली नहीं है। अच्छा तो यही है कि बाहर से चाय मंगवा ली जाय। मैंने उसी समय मेघराज को इशारा किया और चाय पहुंचवा दी। लेकिन मुझे मालूम था, अध्यक्षजी मेरे सही और सामयिक समस्या-निदान-कथन से अप्रसन्न ही हुए हैं अत: किसी अवसर पर इसका मुआवजा मुझे देना होगा।

अधिकारी अधिकारी होता है। एकबार मेरे दोस्त से यह गलती हो गई कि उसने किसी प्रसंग में अधिकारी में 'धि' की मात्रा छोटी लिख दी। इसी से अधिकारी झल्ला पड़े। बोले, अधिकारी हमेशा बड़ा होता है इसलिए धि की मात्रा भी बड़ी होती है। यह सुन वह दोस्त भीतर से तन गया। गलत चीजों को सहना और उनसे हार खाना उसके स्वभाव में नहीं था सो उसने तुरता से उनके सामने डिक्शनरी रख दी। बोले, ये डिक्शनरियां-विक्शनरियां भी आप जैसे लोगों ने ही लिखी हैं। वह कुछ नहीं बोला। बोलता तो शायद नौकरी से ही हाथ धो बैठता। बहुत दिन निकल गये। योगेशजी को कोई पोइन्ट हाथ नहीं लगा। एक दिन वे अचानक मेरे कक्ष में आये और बोले, भानावतजी आपसे मिलने आने वाले कौन हैं। अधिकांश तो मुझे फालतू ही लगते हैं। मैंने धीरप से उत्तर दिया, कोई सड़क के ऐरेगेरे तो होने से रहे। यदि आपको ऐसा लगता है तो आप अपना दफ्तर नाल से सटा लगवालें ताकि जो भी आयेगा, सबसे पहले आपसे मिलेगा। मैं समझ गया, खुन्नक चाय की तो थी ही, यह भी कि जो भी आते हैं वे उनसे क्यों नहीं मिलते हैं।

शब्द रंजन
उदयपुर, सोमवार 01 जनवरी 2018

सम्पादकीय

पुरस्कारों की बढ़त

इन दिनों साहित्यकारों में विचार करने के लिए अनेक विषय डोलते नजर आ रहे हैं। कोई समय था जब किसी गोष्ठी-संगोष्ठी के लिए अच्छे विषय नहीं मिलते थे। अब वह बात नहीं रही। साहित्य के सरोकारों को छूते अनेक विषयों ने अपना क्षेत्र विस्तार किया है। साहित्य ने भी अपनी सीमाओं का वितान बढ़ाया है।

सबसे अहम और ताजा विषय तो यही है कि साहित्य में पुरस्कारों की बड़ी बढ़त हुई जा रही है। दस-बीस वर्ष पूर्व की तुलना में अब दिये जाने वाले पुरस्कारों का 30 प्रतिशत ग्राफ बढ़ा है। इस ग्राफ में पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं के साथ-साथ पुरस्कारजनित समारोहों की तादाद तथा पुरस्कार स्वरूप दिये जाने वाले शॉल, दुशालों, सम्मानपत्रों और मंचासीन अतिथियों की उपस्थिति में भी आशातीत वृद्धि हुई है।

पहले किसी समारोह का अध्यक्ष पद मुख्य तथा गरिमावान हुआ करता था। अब उसकी जगह मुख्य अतिथि का रूतबा बढ़ा दिखाई देता है। मुख्य अतिथि भी, अधिक वजनी बनाने के लिए एक की बजाय दो-दो और ऐसे ही विशिष्ट अतिथि के पद बढ़े हैं। कहीं-कहीं तो अध्यक्षों का भी मंडल बना दिया जाता है। इस अध्यक्ष मंडल में जितने चाहो, उतने अध्यक्ष बना दिये जाते हैं। फिर विशिष्ट वक्ता भी होने लग गये हैं। संयोजक और संचालक अलग होता है। यही नहीं, आयोजक संस्थान का अध्यक्ष, महामंत्री भी यदि इस समय महत्वपूर्ण नहीं बनता है तो और कौनसा समय बचेगा जब उसकी भी पहचान होगी।

इन सबके साथ यदि मंच को और अधिक शोभावान बनाना हो तो पुरस्कार प्राप्तकर्ता अथवा आयोजनकर्ताओं को भी आप मंच पर शोभित कर दीजिये। मंच की यह गरिमा आयोजकों की दृष्टि से तो बढ़ी हुई होती है पर कई बार हास्यास्पद ही अधिक होती है जब आयोजन संस्थान के मुख्य पारिवारिकजन भी अति मुख्य बनाकर ठिा दिये जाते हैं।

इस मंच के सामने दर्शकों का मंच कई बार अत्यन्त ढीला, लचीला और बेअसर हुआ लगता है। ऐसा भी समय आता है जब दर्शक दीर्घा में बैठे लोग मुख्य मंच पर बैठे सम्मानितों की तुलना में एक चौथाई उपस्थिति देता होता है तब मुख्य मंच ही दर्शक मंच की भूमिका देता लगता है।

पुस्तक लोकार्पण समारोह में कृति के लोकार्पित होने से पूर्व समीक्षक उस कृति के सम्बन्ध में कसीदे बांच कर उसकी भूमिका बना कृति को श्रेष्ठतम बनाने की कोशिश में जुटे रहते हैं। श्रोताओं में फुसफुसाहट होती है कि जब कृति ही लोकार्पित नहीं हुई तो इनके पास समीक्षा करने को कैसे पहुंच गई। अब समीक्षा का अर्थ प्रशंसा हो गया है। कृति को निष्पक्ष देखने वाले समीक्षक ऐसे समय ही नहीं, बाद में भी वे कृति देखने से वंचित कर दिये जाते हैं।

पुरस्कार स्वरूप दी जाने वाली लिफाफा बंद राशि और प्राप्तकर्ता के सम्बन्ध में भी दबी जबान कई बातें खुलती सुनाई देती हैं। इनमें कितनी सच्चाई है, इसका रहस्य बना रहता है पर दीवालों के भी कान होते हैं, कहावत इस रहस्य को भी सम्बन्धित व्यक्ति के माध्यम से ही उजागर करने में कभी-कभी सफल हो जाती है।

कुल मिलाकर पुरस्कारों का भी एक उद्योग बन गया है। कई बार सौदा बैठता नहीं है तब आश्वस्त बंधु परेशानी लिये रहते हैं। होड़ाहोड़ी चलती रहती है। ऐसे में राजनीति का अतर लगा फूंबा ज्यादा असर करता है और श्योर हिट देता है।

निष्कर्षत: यह सब तो ठीक है लेकिन अर्थशास्त्र का वह सिद्धांत साहित्य शास्त्र में भी जुड़ने लग गया है कि ज्यों-ज्यों साहित्यिकों की ऐसी पुरस्कृत होती जमात बढ़ती रहेगी, साहित्य का भट्टा नीचे बैठता रहेगा।

नंद चतुर्वेदी की स्मृति में काव्यांजलि

प्रख्यात कवि प्रो. नंद चतुर्वेदी की स्मृति में उनकी पुण्य तिथि पर काव्यांजलि का आयोजन किया गया। गोष्ठी के प्रथम चरण में डॉ. मधु अग्रवाल, प्रीता भार्गव, डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ, डॉ. राजकुमार व्यास, श्रेय चतुर्वेदी एवं आदर्श चतुर्वेदी ने

नंदजी के गीतों एवं कविताओं का सरस पाठ किया। द्वितीय चरण में डॉ. मंजु चतुर्वेदी, डॉ. ज्योतिपुंज, लालदास पर्जन्य, किशन दाधीच ने काव्यांजलि प्रस्तुत की। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. अरूण चतुर्वेदी ने की। विशिष्ट अतिथि प्रो. माधव हाड़ा ने कहा कि नंद बाबू ने हमेशा अभिनव, अद्‌भुत सरल और अर्थवान गद्य लिखा। मुख्य अतिथि पत्रकार हिम्मत सेठ थे। गोष्ठी में डॉ. रश्मि बोहरा तथा उग्रसेन राव ने भी विचार रखे। प्रसंग संस्थान के संस्थापक डॉ. इन्द्रप्रकाश श्रीमाली ने कहा कि यह गोष्ठी प्रसंग संस्थान, नंद चतुर्वेदी फाउंडेशन एवं वर्धमान महावीर कोटा खुला विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई।

किरणमल सावनसुखा बने अध्यक्ष

उदयपुर। ओसवाल बड़े साजन सभा, पंचायती नोहरे की कार्यसमिति के पांच पदाधिकारी एवं दस कार्यसमिति सदस्यों के चुनाव 30 दिसंबर को सम्पन्न हुए। इसमें अध्यक्ष किरणमल सावनसुखा, उपाध्यक्ष तेजसिंह बोल्या, मंत्री आलोक पगारिया, सहमंत्री अर्जुन खोखावत, कोषाध्यक्ष गजेन्द्र जोधावत तथा कार्यकारिणी सदस्यों में प्रमोद खाब्या, गणेशलाल गोखरू, मानसिंह पानगड़िया, सुशीलकुमार बांठिया, प्रवीण सरूपरिया, महेन्द्रसिंह चपलोत, नक्षत्र तलेसरा, ललित वर्डिया, अनिल कोठारी तथा जितेन्द्र नाहर चुने गये। अगले दिन गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष सावनसुखा से भेंट कर बधाई दी।

दस दिवसीय शिल्पग्राम उत्सव सम्पन्न

उदयपुर। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, द्वारा आयोजित दस दिवसीय शिल्पग्राम उत्सव का शुभारंभ 21 दिसम्बर को राज्यपाल श्री कल्याण सिंह ने नगाड़ा वादन कर किया। इस उत्सव में 18 राज्यों के 600 लोक कलाकारों एवं 21 राज्यों के 400 शिल्पकारों ने भाग लिया।

इस उत्सव में भोरताल (असम), डेडिया (उत्तरप्रदेश), भपंग (राजस्थान), लाय हरोबा (मणिपुर), नटुआ (पश्चिम बंगाल), पूजा कुनीथा (कर्नाटक), रौफ (जम्मू व कश्मीर), मलखम्भ (महाराष्ट्र), होजागिरी (त्रिपुरा), बिहू (असम), पुंग चोलम, स्टिक, थांग-ता (मणिपुर), भांगड़ा (पंजाब), स्किट (राजस्थान), समई (गोवा), छपेली (उत्तराखंड), चांडी (सिक्किम), डांग (गुजरात), लंगा (राजस्थान), बाउल गायन (पश्चिम बंगाल), घोड़े मोडनी (गोवा), शंख वादन (ऑडीशा), सिरमौरी नाटी (हिमाचल प्रदेश), रोप संबलपुरी (ऑडीशा), सिद्दी धमाल (गुजरात), वीर वीरई नटनम (पुद्दूचेरी), ढाली (पश्चिम बंगाल), लावणी (महाराष्ट्र), चरी (राजस्थान) इत्यादि को देखने के लिए देर रात्रि तक प्रतिदिन सैकड़ों लोगों का हुजूम बना रहा।

उल्लेखनीय पक्ष यह रहा कि इस बार हाट बाजार में जिन शिल्पकारों ने भाग लिया उनकी बनी वस्तुओं की खूब बिक्री हुई। शिल्पकारों ने भी मेले को विशेष रंग देने के लिए अधिकाधिक हस्तशिल्प लाकर अपनी यादगारी प्रस्तुत की। ऐसा लगा कि अब यह मेला न केवल हमारे देश में अपितु पूरे विश्व पटल के पर्यटकों की आकर्षक शोभा बनता जा रहा है।

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय, विकास आयुक्त हस्त शिल्प नई दिल्ली, विकास आयुक्त हथकरघा नई दिल्ली, राष्ट्रीय पटसन बोर्ड तथा क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों के सहयोग से उत्सव का आयोजन हुआ।

15 पाक विस्थापितों को भारतीयता की शपथ

उदयपुर। अतिरिक्त जिला कलक्टर (शहर) सुभाषचंद्र शर्मा ने सोमवार को 15 पाक विस्थापितों को भारतीय नागरिकता की शपथ दिलाई।

यह सभी वर्ष 2009 से पूर्व से भारत में निवासरत हैं जिनके आवेदन की पात्रता की जांच के बाद यह कार्यवाही की गई। श्री शर्मा ने अपने कार्यालय में सभी 15 पाक विस्थापितों को राजनिष्ठा की शपथ दिलाई जिनमें एक दिव्यांग बालिका और एक गर्भवती महिला शामिल थी। अनिल कुमार, संगीता कुमारी, सुशील कुमार, सनजीत कुमार, सोनम राजपूत, खुशबू कुमारी, दीपक कुमार, संगीता बाई, शंकर लाल, सपना कुमारी, सनी कुमार, लखोमल, नानकी, विनोद कुमार एवं निकिता कुमारी ने राजनिष्ठा की शपथ ली।

विद्यार्थियों ने सीखे रिपोर्टिंग के गुर

उदयपुर। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों ने नई दिल्ली में पत्रकारिता से जुड़े विभिन्न संस्थानों का अवलोकन कर मीडिया से जुड़े वरिष्ठ पत्रकारों एवं शिक्षाविदों से मुलाकात एवं संवाद कर रिपोर्टिंग के गुर सीखे।

विभाग के प्रभारी डॉ. कुंजन आचार्य के नेतृत्व में स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों ने प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया के सभागार में प्रधान संपादक विजय जोशी, हिन्दी संस्करण भाषा के संपादक निर्मल पाठक, फोटो प्रभाग के संपादक गुरविंदर ओसान से यूज़ एजेंसी की कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से जानकारी ली। विद्यार्थियों ने जाना कि डिजिटल मीडिया के दौर में फेक न्यूज से निपटना सबसे चुनौती भरा काम है। इससे निजात पाने के लिए चौकस एवं मुस्तैद रहना होगा।

आईआईएमसी ऑडिटोरियम में आयोजित संवाद सत्र में केजी सुरेश के साथ आईआईएमसी के प्रोफेसरों में डॉ. सुनेत्रा सेन, डॉ. अनुभूति यादव, डॉ आनंद प्रधान एवं डॉ मुकुल शर्मा ने छात्रों के सवालों के जवाब दिए। अन्य वक्ताओं ने विकासात्मक खबरों की प्रस्तुति, न्यू मीडिया के खतरों तथा प्रिंट मीडिया के सामने आ रही चुनौतियों की विस्तार से जानकारी दी।

मंडी हाउस स्थित दूरदर्शन न्यूज़ के प्रोड्यूसर ओमप्रकाश दास ने दूरदर्शन के सभी स्टूडियो, न्यूज़ रूम और कंट्रोल रुम में होने वाले तमाम तकनीकी बातों की विस्तार से जानकारी दी। निदेशक विवेक वैभव ने समाचारों के प्रसारण के बारे में बताया।

आजतक के सीनियर एडिटर गोपी शर्मा, डिप्टी एडिटर सईद अंसारी, सीनियर एंकर श्वेता झा, मेकअप हेड भावना सुरीन और इंडिया टुडे के असिस्टेंट एडिटर मंजीत ठाकुर ने विस्तार से चर्चा की। इंडिया न्यूज के रीजनल चैनल के सम्पादक रूपेश श्रोती ने खबरों की कार्यप्रणाली के साथ ही सेटेलाईट अर्थ स्टेशन का विजिट करवाया।

एनसीआर के सबसे बड़े चैनल टोटल टीवी के न्यूज़ रूम और स्टूडियो का भी अवलोकन किया गया।

यात्रा के दौरान प्रेस क्लब ऑफ इंडिया भी देखा जहां क्लब के महासचिव व द हिन्दू के विनय कुमार ने सभी का स्वागत किया। द ट्रिब्यून के मोहन कुमार और ज़ी न्यूज़ के राहुल सिन्हा से भी मुलाकात की गई।

विद्यार्थियों का दल माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के नोएडा परिसर भी पहुंचा जहां प्रो रजनी नागपाल तथा प्रो. अरुण भगत, प्रो. लालबहादुर ओझा, प्रो सूर्यकान्त, प्रो बीएस निगम तथा राकेश योगी से रोचक संवाद हुआ। तीन दिन की यात्रा में पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के प्रभारी डॉ. कुंजन आचार्य ने दिल्ली मीडिया को अपने विद्यार्थियों द्वारा किये जा रहे विभिन्न रचनात्मक कार्यों की जानकारी दी तथा सभी वरिष्ठ पत्रकारों को मेवाड़ी पगड़ी और उपरना ओढ़ा कर अभिनन्दन किया।

गृहमंत्री कटारिया ने उदयपुर जिले के विकास को कई दृष्टियों से श्रेष्ठतर बताया

उदयपुर। वर्तमान राज्य सरकार ने अपने कार्यकाल के दौरान किये गये वादों पर खरा उतरते हुए विकास के अनेक आयाम स्थापित किये हैं। इस दौरान राजस्थान देश के अग्रणी राज्यों में शामिल हुआ है। प्रदेश के विकास में उदयपुर जिले ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सरकार की विभिन्न योजनाओं विशेषकर फ्लेगशिप योजनाओं के माध्यम से आमजन को राहत प्रदान करने में उदयपुर जिला अग्रणी रहा है। यह बात गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने राज्य सरकार के चार वर्ष के कार्यकाल पूर्ण होने पर भंडारी दर्शक मंडप में आयोजित प्रेसवार्ता में कही।

कटारिया ने कहा कि सभी जिलास्तर पर सरकार के चार वर्ष का लेखाजोखा आम जनता के सम्मुख रखा जा रहा है। जनता द्वारा दिये धन का उपयोग किस तरह किया गया और उसकी क्या उपलब्धियां रहीं यह जानकारी सर्वसुलभ कराई जा रही है। उन्होंने कहा कि मेरी दृष्टि में पहली उपलब्धि पंचायत राज का पुनर्गठन है। हमने विकास को आधार मानकर पंचायत समितियों का पुनर्गठन किया और 47 नई पंचायतें बनाई। जिले में जो 11 समितियां पहले थीं उनको भी विकास की धारा में जोड़ा गया।

शिक्षा को चुनाव के साथ जोड़ने का पूरे देश में पहला काम राजस्थान ने किया। जनप्रतिनिधि पढ़ा लिखा हो इसका अनुसरण अन्य राज्यों ने भी किया। इसके अंतर्गत नगरपालिका, सहकारी समितियों को भी जोड़ा गया। इसी तरह भामाशाह योजना में परिवार की मुखिया महिला को बनाया। इस योजना के साथ भामाशाह स्वास्थ्य योजना प्रारंभ की। सबको बैंक खातों तथा आधार कार्ड से जोड़ा। कोई भी कार्डधारी सरकारी चिकित्सालय तथा अन्य राज्य सरकार द्वारा मान्य चिकित्सालयों में कहीं भी इलाज कराये सरकार उसका 30 हजार से 3 लाख तक का पेमेंट करेगी।

कटारिया ने कहा कि आदिवासी क्षेत्र में गोगुन्दा, झाड़ोल, कोटड़ा, सराड़ा खेरवाड़ा जैसी हर ट्राइबल तहसील में कॉलेज खोला गया। इसका सुपरिणाम यह रहा कि शिक्षालयों से सर्वाधिक ट्राइबल बालाएं शिक्षण ले रही हैं और उन्हें रोजगार के सुअवसर प्रदान किये

जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि वसुंधराजी ने पांच हजार तीन सौ टेन प्लस टू स्कूल खोले। हर पंचायत समिति में आईटीआई खोली। केंद्र सरकार ने भी खूब पैसा दिया जिससे दूर के प्रांतों को भी उदयपुर से जोड़ा गया। वर्तमान में उदयपुर में 36 फ्लाईट आती जाती हैं। कुछ ही दिनों में रेलवे को पुरी से भी जोड़ने की उम्मीद पूरी की संभावना बन रही है।

कटारिया ने कहा कि नहरों के सुधार के लिए भी काफी काम किया गया। 146 करोड़ तो केवल जयसमंद की नहरों को सुधारने के लिए ही व्यय किये गये। इसी तरह न्याय आपके द्वार की योजना के अंतर्गत 95 लाख छोटे-बड़े मुकदमों का निस्तारण हुआ।

उन्होंने बताया कि मेवाड़ की तरक्की के लिए अधिक से अधिक रोजगार उपलब्ध हों इसके लिए ट्यूरिस्ट ही आधार हैं। अत: जरूरी है कि यहां आवागमन के पर्याप्त साधन हों। रहने की सुविधा के लिए पर्याप्त होटल हों। यह सब कार्य तेजी से हो रहा है। हमने जहां-जहां भूमि पूजन किया है वहां साल दो साल में लोकर्पण भी नजर आयेगा। हर गांव और हर ढाणी बीजली से रोशन होगी।

जिले में इन दिनों प्रशासनिक व्यवस्थाएं गड़बड़ातीं नजर आ रही हैं। गृहमंत्री के गृह जिले में ही जो स्थितियां बनीं हैं वे अकल्पनीय ही कही जा रही है। इस सवाल के उत्तर में गृहमंत्री ने कहा कि पुलिस ने समय रहते जो कार्य किया वह यदि नहीं होता तो एक बड़ा हादसा हो सकता था। पांच मिनट की भी चूक हो जाती तो उदयपुर जल जाता। मेरे पिछले 40 वर्षों के राजनैतिक जीवन में जो कुछ मैंने देखा, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि हर हेड में क्राइम घटा है। सजा के प्रतिशत में भी हम देश में चौथे स्थान पर हैं। हमारे पास जो साधान और सुविधाएं हैं उसनके आधार पर हमने पुलिस को वेल एक्यूब्ड किया है। सोशल साइट पर जो मेसैज देखने सुनने को मिलते हैं, वे इतने खतरनाक होते हैं कि कभी-कभी जिन्दा व्यक्ति भी मरा हुआ हो जाता है।

कटारिया ने कहा कि स्मार्ट सिटी के टेंडरों में पूरे देश में हम दूसरे नंबर पर हैं। अगले चुनाव में कटारियाजी के खड़े होने के सवाल का उत्तर देते हुए गृहमंत्री ने कहा कि गुलाबचंदजी ने पहले भी कभी चुनाव नहीं लड़ा। पार्टी जो आदेश देगी वही करूंगा।

जिंक स्मेल्टर देबारी में 'बिईंग सेफ' वर्कशॉप तथा किसान दिवस

उदयपुर। हिन्दुस्तान ज़िंक की इकाई जिंक़ स्मेल्टर देबारी में सुरक्षा के प्रति जागरूकता के उद्देश्य से जिंक़ एवं

संविदा कर्मचारियों के लिए 'बिईंग सेफ' वर्कशॉप का आयोजन किया गया। वर्कशॉप में 200 से अधिक जिंक़ एवं संविदा कर्मचारियों ने सुरक्षा के प्रति जागरूकता का संकल्प लिया।

हिन्दुस्तान जिंक़ के हेड कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने कहा कि सुरक्षा नियमों के प्रति लापरवाही जीवन के लिए खतरा हो सकता है। सुरक्षा के प्रति जागरूकता से व्यक्ति खुद एवं परिवार सुरक्षित होगा। विशेष रूप से बच्चों को सड़क सुरक्षा के लिये ट्राफिक नियमों की पालना, हेलमेट पहनना, बिना लाईसेंस वाहन नहीं चलाना, सुनिश्चित करना होगा।

जिंक द्वारा देबारी के गोडवा गावं में राष्ट्रीय किसान दिवस का आयोजन किया गया। इसमें 8 गावों के 500 से अधिक किसानों ने भाग लिया। मावली विधायक दलीचन्द डांगी ने किसान मेले की सराहना की और किसानों को सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं का अधिक लाभ लेने को कहा। पवन कौशिक ने बताया कि जिंक़ ग्रामीण विकास हेतु पिछले 10 वर्षो से सामाजिक उत्तरदायित्व के कार्यक्रमों का संचालन कर रहा है। कार्यक्रम मेड़ता सरपंच खेमसिंह, पशुपालन विभाग के चंद्रशेखर भटनागर, केवीके के दीपक जैन, जिंक़ अधिकारी उपस्थित थे।

कुचले पैर की सफल सर्जरी

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने दुर्घटना में कुचले पैर की सफल सर्जरी की है। यह सर्जरी भामाशाह योजना के तहत निशुल्क की गई। पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि राजसमंद निवासी 23 वर्षीय युवक का दायां पैर दुर्घटना में बुरी तरह कुचल गया था जिससे उसका पैर काटने की नौबत आ गई थी। मरीज के परिजनों ने गत दिनों उसे पीआईएमएस हॉस्पिटल में दिखाया। यहां प्लास्टिक सर्जन डॉ. एम. पी. अग्रवाल ने मरीज की स्थिति को देखते हुए तुरन्त सर्जरी करने का निणर्य लिया। इस दौरान मरीज के दोनों पैरों को जोड़कर रखा गया और एक पैर का मांस दूसरे पैर पर चढ़ाया गया। तीन सर्जरी के बाद मरीज के दोनों पैर अब ठीक हैं और कोई खतरा नहीं है।

सन्त पॉल में नौनिहालों का वार्षिकोत्सव

उदयपुर। सन्त पॉल सीनियर सैकण्डरी स्कूल में कक्षा एल.के.जी. व एच.के.जी. के छात्रों ने पहली बार मंच पर प्रदर्शन किया। यह कार्यक्रम इन्हीं

नन्हे-मुन्ने छात्रों द्वारा तैयार किया गया था जिसमें प्रस्तुति भी उन्हीं की रही। मुख्य अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी नरेशचन्द्र डाँगी तथा विशिष्ट अतिथि सन्त मेरीज कॉन्वेन्ट स्कूल की प्राचार्या सिस्टर फ्रान्सिन थी। कार्यक्रम में 410 छात्रों ने मंच पर प्रथम बार प्रस्तुति देते हुए शास्त्रीय नृत्य, समूह नृत्य, राजस्थानी नृत्य तथा देशभक्ति पर आधारित नृत्य नाटिका प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया। प्राचार्य फादर जॉर्ज वी.जे. ने सन्त पॉल स्कूल की 64 वर्षीय शिक्षण परम्परा को याद दिलाते हुए कहा कि आज भी हम नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा देते हैं। इस अवसर पर स्वच्छ भारत अभियान के तहत आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वाले अभिभावकों को विद्यालय की ओर से सम्मानित किया गया।

वोडाफोन और आईटेल में साझेदारी

उदयपुर। वोडाफोन इण्डिया और आईटेल ने शानदार फीचर्स से युक्त आईटेल ए 20 स्मार्टफोन की खरीद पर आकर्षक कैशबैक ऑफर उपलब्ध कराने के लिए साझेदारी की है। इस ऑफर के तहत आईटेल ए 20 खरीदने वाले उपभोक्ता 3690 की कीमत के इस फोन पर 2100 का कैशबैक पा सकेंगे।

ट्रांजिशन इण्डिया में मार्केटिंग के सीनियर वाईस प्रेज़ीडेन्ट गौरव टिक्कू ने कहा कि देश में 4जी कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने के दृष्टिकोण के साथ वोडाफोन और आईटेल ने यह साझेदारी की है। बड़ी संख्या में लोगों को स्मार्टफोन और डेटा सेवाएं उपलब्ध कराकर इंटरनेट की पहुंच बढ़ाना इसका मुख्य उद्देश्य है। इस ऑफर का लाभ उठाने के लिए आईटेल और वोडाफोन के उपभोक्ताओं को 3690 की कीमत पर आईटेल ए 20 स्मार्टफोन खरीदना होगा और इसे 18 महीनों तक 150 से रीचार्ज करना होगा। रीचार्ज एक ही बार में या अलग-अलग इस तरह से किया जाना चाहिए कि महीने का कुल रीचार्ज कम से कम 150 हो। 18 महीनों के अंत में उपभोक्ता को 900 का कैशबैक मिलेगा। 150 का रीचार्ज जारी रखने पर अगले 18 महीनों के बाद उपभोक्ता को फिर से 1200 का कैशबैक मिलेगा। उपभोक्ता 31 मार्च 2018 तक इस ऑफर का लाभ उठा सकते हैं। यह कैशबैक उनके एम-पैसा वॉलेट में आएगा, जिसका इस्तेमाल वे अपनी सुविधानुसार रीचार्ज, बिलों के भुगतान, धन प्रेषण, नकद निकासी आदि के लिए कर सकते हैं। वोडाफोन इण्डिया में एसोसिएट डायरेक्टर-कन्ज़्यूमर बिजनेस अवनीश खोसला ने कहा कि हमें आईटेल के साथ इस साझेदारी का ऐलान करते हुए बेहद खुशी का अनुभव हो रहा है जिसके द्वारा उपभोक्ता बड़ी आसानी से अपने फीचर फोन को स्मार्टफोन में बदल सकेंगे और वोडाफोन सुपरनेट का लाभ उठा सकेंगे।

आशीर्वाद आटे के भ्रामक वीडियो पर प्रतिबंध

उदयपुर। न्यायालय ने भारत के नम्बर एक पैकेज वाले आटा ब्राण्ड आशीर्वाद आटा में प्लास्टिक के आरोपों को बनाने, प्रसारण और इनका संचार करने वाले विडियो पर प्रतिबंध लगाने का आदेश दिया है। न्यायालय ने सोशल मीडिया को आशीर्वाद आटे के अस्तित्व को भंग करने वाले झूठे विडियो को प्रकाशत एवं परिचालन करने से वर्जित कर दिया है।

आशीर्वाद आटा जो देश में पैक किए हुए आटे का नंबर 1 ब्रांड है, इस पर इंटरनेट प्लेटफार्मों पर दुर्भावनापूर्ण वीडियो सामने आ रहे थे। इनमें यह आरोप लगाया जा रहा है कि आटे में प्लास्टिक मिला हुआ है। इन वीडियो में दावा किया गया है कि यदि आशीर्वाद आटे से बने पेडों को कई बार धोया जाए तो इससे गम जैसा पदार्थ बन जाता है, जिसमें प्लास्टिक होने का संदेह था। इन विडियोज़ में जिसे प्लास्टिक का रूप दिया जा रहा है, वास्तव में वह एक गेहूं प्रोटीन (जिसे ग्लूटेन के रूप में भी जाना जाता है),जो आटे को एक साथ बांधता है और आटा गूंधने के बाद आटे को लचीला बनाता है। प्रतिष्ठित ब्रांड के खिलाफ किए गए आधारहीन आरोपों पर ध्यान देते हुए कंपनी ने पहले ही खबर समय के मालिक और उनके अज्ञात सहयोगियों, जिन्हें इन वीडियो के पीछे माना जाता है के खिलाफ कोलकाता में एक पुलिस शिकायत दायर की थी। इसके अलावा, कंपनी ने इस मामले से जुड़े लोगों के विरुद्ध, वीडियो के खिलाफ और प्रतिष्ठा के नुकसान के लिए बेंगलुरु के सिटी सिविल एंड सेशन जज के न्यायालय में याचिका दायर की है।

मामले की सुनवाई पर कोर्ट ने 16.12.2017 को प्रतिवादियों, जिसमें इंटरनेट/सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म प्रदाता, गूगल, यूट्यूब, फेसबुक और ट्वीटर को ऐसे विडियो के प्रकाशन प्रसारण संचार या ऐसे वीडियो को उपलब्ध करवाने या ऐसे विडियो को किसी भी तरह से सार्वजनिक देखने के लिए उपलब्ध करवाने या जारी रखने से प्रबंधित कर दिया है।

50,000 से ज्यादा वूडवर्कर्स ने किया श्रमदान

उदयपुर। फेविकोल ने श्रमदान दिवस पर एक भारतव्यापी सामुदायिक अभियान में 50,000 से ज्यादा वूडवर्कर्स के साथ गठजोड़ किया है। इन वूडवर्कर्स और कॉन्ट्रैक्टर्स ने लगभग 800 एनजीओ, बेनेफिशियरी स्कूलों, अस्पतालों और संस्थानों में फर्नीचर रिपेयर और पुर्ननिर्मित करने के लिए एक दिन तक निशुल्क श्रमदान किया। फेविकोल चैंपियंस क्लब (एफसीसी) के तहत आयोजित यह कार्य देश के 291 शहरों में आयोजित किया गया। इस साल उदयपुर में लगभग 550 कारपेंटर्स ने हिस्सा लेकर लगभग 4 संस्थानों का पुनरोद्धार किया।

फेविकोल डिवीज़न, पिडिलाईट इंडस्ट्रीज प्रेसिडेंट सलिल दलाल ने कहा कि फेविकोल चैंपियंस क्लब (एफसीसी) वूडवर्कर्स और कॉन्ट्रैक्टर्स का एक एक्सक्लुसि क्लब है। यह वूडवर्कर्स और उनके परिवारों के लिए एक प्लेटफॉर्म का काम करता है, जहां वो अपने बिज़नेस के विस्तार के लिए पर्सनल और प्रोफेशनल्स स्किल्स बढ़ा सकते हैं। एफसीसी सदस्यों ने निरंतर समाज को बेहतर बनाने की दिशा में काम किया है। वो समाज के कल्याण के लिए कई गतिविधियां चलाते रहे हैं, जिनमें मेडिकल कैंप, ब्लड डोनेशन, पल्स पोलियो, आंखों की जांच, स्वच्छ भारत अभियान सफाई अभियान, बाल मेला, छात्रवृत्ति आदि शामिल हैं। सलिल दलाल ने कहा कि श्रमदान दिवस एफसीसी सदस्यों का एक सराहनीय प्रयास है। एफसीसी समुदाय में वो सदस्य शामिल हैं, जिन्होंने अपनी जिम्मेदार सेवाओं द्वारा समाज को अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। श्रमदान दिवस एफसीसी सदस्यों के कौशल द्वारा आसपास के समुदायों का जीवन स्तर सुधारने में सकारात्मक योगदान देने का एक प्रयास है।

जयपुर की श्री श्याम क्रिकेट क्लब बनी वंडर सीमेंट साथ:7 की चैम्पियन
-महिला वर्ग में पेस मेकर उदयपुर बनी विजेता-

उदयपुर। वंडर सीमेंट साथ:7 क्रिकेट महोत्सव के द्वितीय संस्करण का समापन उदयपुर के दिल्ली पब्लिक स्कूल के ग्राउण्ड पर रविवार को हुआ जिसमें पुरुष वर्ग में जयपुर की श्री श्याम क्रिकेट क्लब ने पीसीए इलेवन अहमदाबाद को 23 रन से हराकर चैम्पियनशिप जीती। महिला वर्ग में पेस मेकर उदयपुर ने एसएस जैन सुबोध गर्ल्स पीजी कॉलेज को 5 विकेट से हराकर खिताब पर कब्जा जमाया।

इस प्रतियोगिता को लेकर राजस्थान, गुजरात एवं मध्यप्रदेश राज्यों के लोगों में बड़ी उत्सुकता देखी गयी और कुल 48,000 से ज्यादा लोगों ने इसमें हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में महिला प्रतिभागियों ने भी काफी उत्साह से भाग लिया। साथ:7 क्रिकेट महोत्सव के द्वितीय संस्करण में 60 से अधिक महिला टीमों का पंजीकरण हुआ, और 1000 से भी ज्यादा महिलाओं ने इसमें भाग लिया। इस पूरे महोत्सव में लगभग 5000 के करीब मैच हुए।

इस अवसर पर भारतीय क्रिकट टीम के पूर्व कप्तान कपिल देव, केबिनेट मंत्री श्रीचंद कृपलानी, सांसद अर्जुनलाल मीणा, नगर निगम महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, वंडर सीमेंट के उपाध्यक्ष विमल पाटनी, वंडर सीमेंट के निदेशक विवेक पाटनी, संयुक्त प्रबंध निदेशक विकास पाटनी, एचआरएच ग्रुप के लक्ष्यराजसिंह मेवाड़, पुलिस अधीक्षक राजेन्द्रप्रसाद गोयल ने हजारों दर्शकों के साथ फाइनल मैच देखा तथा खेल का आनन्द उठाया। इस पूरे टूर्नामेंट को सफल बनाने में वंडर सीमेंट के मेनेजमेंट एडवाइजर तरुण सिंह चौहान का विशेष योगदान रहा।

तहसील, जिला एवं जोनल स्तर पर मुकाबला करने के बाद हर जोन की विजेता टीमें प्रतियोगिता के फाइनल स्तर पर पहुंची। कई नॉक-आउट मुकाबलों के बाद पुरुष वर्ग में श्री श्याम क्रिकेट क्लब, जयपुर और पीसीए इलेवन अहमदाबाद तथा महिला वर्ग में पेस मेकर उदयपुर एवं एसएस जैन सुबोध गर्ल्स पीजी कॉलेज टीमें फाइलन राउंड में पहुँची। साथ:7 क्रिकेट महोत्सव का फाइनल मैच अत्यन्त ही रोमांचक रहा, जिसमें खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

सन् 1983 में भारत को पहला वर्ल्ड कप जिताने वाले भारतीय क्रिकेट टीम के भूतपूर्व कप्तान श्री कपिल देव की उपस्थिति ने सभी खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाया और अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। टूर्नामेंट की सराहना करते हुए श्री कपिल देव ने टूर्नामेंट के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी श्री श्याम क्रिकेट क्लब जयपुर के सुशील मीणा को स्वयं की तरफ से एक लाख रूपये एवं वंडर सीमेंट की ओर से 35000 के नकद पुरस्कार से सम्मानित किया।

अतिथियों ने पुरुष वर्ग में विजेता टीम को चैंपियन ट्रॉफी, प्रमाण-पत्र के साथ 3,50,000 रूपये का नकद पुरस्कार प्रदान किया। उपविजेता टीमों को क्रमश: 1,00,000 तथा 70,000 रूपये के नकद पुरस्कार दिए गए। महिला चैंपियन टीम को विजेता ट्राफी एवं प्रमाण-पत्र के साथ 1,40,000 रूपए के नकद पुरस्कार से सम्मानित किया और उपविजेता टीम को 70,000 रूपये का नकद पुरस्कार दिया गया। प्रत्येक प्रतिभागी को स्पोर्टस् किट भी प्रदान किया गया। इस तरह कुल 40 लाख रूपये के इनाम दिये गये।

टूर्नामेंट में पुरुष वर्ग में मैन ऑफ द मैच लखन, श्रेष्ठ बल्लेबाज सुशील मीणा, श्रेष्ठ फील्डर संजय भदानिया, श्रेष्ठ गेंदबाज कौशल कौशिक को क्रमश: 7000 नकद का पुरस्कार प्रदान किया गया।

महिला वर्ग में उदयपुर की दिव्या को प्लेयर ऑफ द मैच में 3500, प्लेयर ऑफ द सीरीज के लिए 14,000 तथा मैन ऑफ द सीरीज के लिए 35,000 रूपये का नकद पुरस्कार दिया गया।

वंडर सीमेंट के निदेशक विवेक पाटनी ने कहा कि वंडर सीमेंट के साथ:7 क्रिकेट महोत्सव अभियान ने दुनिया भर में अपने स्तर, पहुँच और सहभागिता के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित किए हैं। मुझे खुशी है कि साथ:7 क्रिकेट महोत्सव को लोगों द्वारा व्यापक पैमाने पर सहभागिता एवं प्रशंसा मिली। इससे प्रतीत होता है कि हमने इस अभियान को आयोजित करने के लक्ष्य को हासिल कर लिया है। हम आशा करते है कि इसके माध्यम से जो खेल भावना जागी है, उससे राज्यों तथा देश स्तर पर क्रिकेट को लाभ मिलेगा।

एचडीएफसी बैंक व राज्य सरकार में भागीदारी

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक ने राजस्थान सरकार के साथ भागीदारी करने और राज्य में स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन देने की घोषणा की। इस समझौता पत्र (एमओयू) के तहत,

एचडीएफसी बैंक राज्य सरकार के साथ भागीदारी में स्टार्ट-अप्स के चालू खाते, क्रेडिट काड्र्स तथा अन्य समाधान एचडीएफसी बैंक के स्मार्टअप कार्यक्रम के तहत उपलब्ध करवाएगा।

इसके अतिरिक्त बैंक न केवल राजस्थान में स्टार्टअप्स की पेशकशों का मूल्यांकन ही करेगा अपितु उन्हें अपने समाधान एवं तकनीक प्रदर्शित करने का अवसर भी प्रदान करेगा। योजना भवन में आयोजित समारोह में इस एमओयू पर मुख्य सचिव आईटी एण्ड कम्यूनिकेशन राजस्थान सरकार अखिल अरोड़ा और एचडीएफसी की हेड ब्रांच बैंकिंग, राजकीय व्यापार एवं ई-कॉमर्स स्मिता भगत ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर एचडीएफसी बैंक के जोनल हेड सत्येन मोदी व अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

सरकार के साथ यह भागीदारी एचडीएफसी बैंक के लम्बे प्रयासों के बाद हुई है जिससे एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र कायम हो सकेगा जो कि नवाचार की भावनाओं और पूरे देश में स्टार्टअप के क्षेत्र को पोषण प्रदान करने वाला हो।

अक्टूबर में बैंक ने पूरे देश में अपनी बैंक शाखाओं में समर्पित स्मार्टअप जोन कायम करने की घोषणा की थी जिनमें जयपुर भी शामिल था। जयपुर में यह स्मार्टअप जोन बैंक की अशोक मार्ग स्थित शाखा में कार्यरत है। इन स्मार्टअप्स जोन्स के माध्यम से विशेषकर प्रशिक्षित बैंककर्मी उद्यमियों को टेलर मेड बैंकिंग एव परामर्शी समाधान उपलब्ध करवाएंगे। इसके अलावा, बैंक के नए स्मार्टअप पोर्टल से स्टार्टअप का मूल्यांकन किया जाएगा ताकि स्टार्टअप के पूरे नेटवर्क के ज्ञान और अनुभव का मूल्यांकन किया जा सके।

वोडाफोन इण्डिया जनवरी में लॉन्च करेगा VoLTE

उदयपुर। भारत के सबसे बड़े दूरसंचार सेवा प्रदाताओं में से एक वोडाफोन इण्डिया ने जनवरी 2018 से अपनी VoLTE सेवाओं की शुरूआत करने की पुष्टि कर दी है। पहली प्रावस्था में ये सेवाएं मुंबई, गुजरात, दिल्ली, कर्नाटक और कोलकाता में उपलब्ध होंगी तथा जल्द ही इन्हें पूरे देश में विस्तारित किया जाएगा। वोडाफोन इण्डिया के मैनेजिंग डायरेक्टर एवं चीफ एक्ज़क्टिव ऑफिसर सुनील सूद ने कहा कि वोडाफोन VoLTE की सेवाओं द्वारा वोडाफोन सुपरनेट 4जी के उपभोक्ता सुपरकॉल कनेक्ट टाईम के साथ एचडी गुणवत्ता के वॉइस कॉल का अनुभव पा सकेंगे। इन सेवाओं का लाभ उठाने के लिए उपभोक्ताओं के पास ऐसा हैण्डसैट होना चाहिए जो वोडाफोन VoLTE और 4जी सिम को सपोर्ट करे। सुनील सूद ने कहा कि वोडाफोन नई तकनीकों और डिजिटल सेवाओं के साथ अपने आप को फ्यूचर रैडी बना रहा है। वॉइस ओवर एलटीई- सेवाओं का लॉन्च उपभोक्ताओं को एचडी गुणवत्ता की कॉलिंग का उत्कृष्ट अनुभव प्रदान करेगा।

भंवरलाल गुर्जर कुल प्रमुख बने

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ कुल की व्यवस्थापिका की बैठक कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत की अध्यक्षता में हुई बैठक में हुई जिसमें

भंवरलाल गुर्जर को आगामी पांच वर्ष के लिए सर्वसम्मति से कुल प्रमुख के पद पर नियुक्त किया। गुर्जर ने जनुभाई के सपनों को पूरा करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर सचिव भेरूलाल लौहार, रजिस्ट्रार प्रो. सीपी अग्रवाल, प्रो. मंजू मांडोत, विशेषाधिकारी डॉ. हेमशंकर दाधीच, डॉ. भवानीपालसिंह राठौड़, डॉ. धमेन्द्र राजौरा, हीरालाल चौबीसा, प्रो. जी.एम. मेहता, डॉ. मनीष श्रीमाली, डॉ. दिलीपसिंह चौहान डॉ. ओम पारीक, जितेन्द्रसिंह चौहान, नजमुद्दीन, के. के. नाहर, डॉ. घनश्यामसिंह भीण्डर, प्रो. आरपी नारायणीवाल आदि उपस्थित थे।

टाटा एस का 20 लाख बिक्री का आंकड़ा पार

उदयपुर। भारत का नंबर 1 मिनी-ट्रक टाटा एस ने 20 लाख वाहनों की बिक्री के आंकड़े को पार कर एक महत्वपूर्ण कीर्तिमान हासिल किया है। पिछले 12 वर्षों के दौरान हर 3 मिनट में टाटा एस एक नए कारोबार को जन्म देता है, रोजगार पैदा करता है और उद्यमशीलता के अवसरों को प्रेरित कर रहा है, जिसके परिणामस्वरूप भारत के सुदूर इलाकों में रहने वाले लोगों के जीवन में बदलाव आ रहा है। रणनीतिक तौर पर अंतिम छोर तक परिवहन से जुड़े सभी कार्यों को पूरा करने के लिए तैयार टाटा एस भारत में अनगिनत छोटे स्तर के ट्रांसपोर्टरों और उद्यमियों के बीच विश्वसनीयता और व्यावसायिक सफलता का पर्याय बन गया है।

टाटा मोटर्स के हेड, कॉमर्शियल व्हीकल बिज़नेस गिरीश वाघ ने कहा कि भारत का पहला मिनी-ट्रक, हमारा छोटा चमत्कार - टाटा एस ने महज 12 साल के अपने शानदार सफर में 20 लाख वाहनों के सड़क पर फर्राटे भरने का महत्वपूर्ण कीर्तिमान हासिल किया है। 65 प्रतिशत बाज़ार हिस्सेदारी के साथ बाज़ार में अग्रणी टाटा एस ने उद्योग में सर्वाधिक बहुमुखी छाटे वाणिज्यिक वाहन के तौर पर खुद को साबित किया है। अंतिम छोर तक परिवहन की उभरती जरूरतों से लेकर भारत को स्वच्छ बनाने के सरकार के स्वच्छ भारत मिशन तक और परिवारों तक गैस सिलिंडरों की आपूर्ति कर प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना तक में टाटा एस योगदान दे रहा है।

तहरीक का.....

(पृष्ठ एक का शेष)

तहरीक के उस ऐतिहासिक अंक की एक नहीं, अनेक विशेषताएं थीं। नज्म के अलावा उसमें गजल, अफसाना, समीक्षा आदि विधाओं के अलावा दूसरी भाषाओं के साहित्य और साहित्य समीक्षा को पेश किया गया था ताकि वे हिन्दी, पंजाबी, कश्मीरी, उड़िया, तमिल, मराठी कन्नड़, गुजराती, राजस्थानी और बंगाली कविता, साहित्य और समीक्षा की महक का उर्दू में मजा लूट सकें।

इस दस्तावेजी प्रकाशन के प्रथम खण्ड में स्वयं गोपाल मित्तल, काजी अब्दुल वदूद इमत्याज, अली अर्शी, मैकश अकबराबादी, रशीद हसन खान, शमसुर्रहमान फारुकी, डॉ. मुशफिक खाजा, बलराज कोमल, अब्दुल कलाम कास्मी, इस्मत जावेद, डॉ. हमीद काश्मीरी और डॉ. सुलेमान अतहर जावेद जैसे प्रतिष्ठित उर्दू आलम और विद्वान भी थे। सन् 1953 से लेकर 1978 तक के पच्चीस वर्षों में पाकिस्तान में सृजित उर्दू साहित्य को भी इस दस्तावेज में नजरअंदाज नहीं किया गया था।

वाणी साधक.....

(पृष्ठ दो का शेष)

प्रश्न : भाजपा प्रदेश अध्यक्ष के रूप में वसुंधरा राजे सिंधिया की चर्चा है।

उत्तर : वो यहां दो-तीन बार आ चुकी हैं। उनके योग प्रबल हैं।

प्रश्न : तब चुनावों में राजनीति दो महिलाओं के इर्दगिर्द होगी ऐसे में....

उत्तर : प्रदेश में वसुंधरा का दमखम उभरेगा, यदि वह पूर्ण जागरूक हो गई।

प्रश्न : धर्म और अध्यात्म की चर्चा के लिए भी कोई कभी आया?

उत्तर : मुरलीमनोहर जोशी, डॉ. कर्णसिंह जैसे अन्य कई नेता हैं जो यहां आ चुके हैं।

प्रश्न : जोशीजी ने क्या चर्चा की?

उत्तर : मुरलीमनोहरजी ने कृष्ण द्वारा मयूर पंख लगाये जाने के संबंध में जानकारी चाही। उनसे तीन घंटे तक वार्तालाप होता रहा।

प्रश्न : डॉ. कर्णसिंहजी के साथ क्या वार्ता रही?

उत्तर : डॉ. कर्णसिंह ने तो मुझे अच्छी जमीन ही दे दी। मैंने कहा कि यों तो कुछ भेंट लेना मेरे लिए वर्जित है पर यदि राजा कभी कुछ देता है तो मैं कैसे मना कर सकता हूं।

'ब्रजेश' नाम से प्रहलादजी एक मासिक पत्रिका प्रकाशित करते हैं जो कई तरह की जानकारी लिए होती है। हम जब लौटने को थे कि प्रहलादजी हमें अपने पास के मंदिर में ले गये, जहां महादेव के दर्शन कराये। वहीं उजाला गणेश के दर्शन कराते समय उन्होंने कहा कि रात्रि में इनका दिव्य प्रकाश देखते ही बनता है। शिवरात्रि, सोमवती अमावस्या को ही इनके दर्शन कराये जाते हैं पर उन्हें अभी-अभी अदृश्य संकेत मिला, जिस कारण मैं आप लोगों को यहां ले आया हूं। आप लोग भाग्यशाली हैं। भारत की यह धरती अनेकानेक अजूबों वाली धरती है। ऐसी धरती सचमुच में यहीं है। मनुष्यों में देवता यहीं अवतरित होकर दर्शन देते हैं।

सोरायसिस इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस में सार्क देशों के विशेषज्ञों की उल्लेखनीय उपलब्धि

उदयपुर। देश की पहली 'सोरायसिस इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस' में भारत, बंग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, भूटान, अफगानिस्तान, मालदीव, पाकिस्तान के विशेषज्ञों सहित अमेरिका, फ्रांस, इजराइल, ऑस्ट्रिया, अर्जेंटीना के चिकित्सकों, शोध छात्रों तथा चर्म रोग उपचार जगत की 500 से अधिक जानी-मानी हस्तियों ने भाग लिया।

कॉन्फ्रेंस के आर्गेनाइजिंग सेक्रेट्री डॉ. प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि इस कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन सार्क-एडी के प्रेसिडेंट डॉ. अनिल गंजू, सार्क-एडी सक्रेटरी लखनऊ के डॉ. नीरज पांडे, चेन्नई के डॉ. मुरलीधर राजगोपालन, कोलकाता के डॉ. सचिन वर्मा आदि विशेषज्ञों ने किया। पहले दिन कुल 9 सत्रों में 40 विशेषज्ञों ने सोरायसिस से जुड़े विभिन्न पहलुओं, उपचार के नए तरीकों, नए अनुसंधानों, उपकरणों आदि पर कई शोधपरक विचारों का आदान-प्रदान किया। चिकित्सा पद्धतियों में हुए क्रांतिकारी परिवर्तनों, भविष्य की चुनौतियों, अवसरों और तकनीकी समावेशन के नए तौर-तरीकों के साथ विचार एवं व्यवहारजनित संवादों का आदान-प्रदान किया गया।

पहले तीन सत्रों में जिनेटिक्स एंड सोरायसिस विषय पर विशेषज्ञों ने चर्म रोग में सोरयसिस की स्थिति, उपलब्ध और प्रचलित उपचार विधियों, इम्यूनो पैथेलॉजी, हिस्टोपैथोलॉजी, डायग्नोस्टिक मैथड्स को विस्तार से जाना। अमेरिका से डॉ. एसपी रायचौधरी, अर्जेंटीना के प्रो. एडवाडो माइसलर ने ऑडियो-विजुअल के माध्यमों से सोरायसिस के कारण, बदलते पैटर्न आदि पर प्रजेंटशन दिया। चौथे सत्र में सोरायसिस में विशेष 'कंडीशंस' मसलन नाखूनों की सोरयसिस, गर्भवती महिलाओं में सोरासससिस निदान की सावधानियां, बच्चों में सोरायसिस की पहचान, उपचार की नई विधियों, जोड़ों पर सोरायसिस के असर आदि पर चर्चा-चिंतन के दौर चले।

इजराइल से प्रो. आर्मन डी कोहेन, डॉ. स्मृति रायचौधरी, डॉ. सीमल देसाई के लाइव प्रजेंटेशन में विदेशों में सोरायसिस के उपचार के तौर तरीकों को जानने का मौका मिला जिससे प्रतिभागी नई ऊर्जा से ओत-प्रोत हो गए।

अंतिम सत्रों में मिथोट्रिक्सिट, साइक्लो स्पोटिन, एजाथायोप्रिन, माइक्रोफिनोलेट मोफेटिल जैसी नई क्रांतिकारी दवाइयों से सोरायसिस का उपचार करने, कई बीमारियों से जूझ रहे मरीजों में कॉम्बिनेशन के अनुप्रयोग से वांछित परिणाम प्राप्त करने आदि पर चर्चा हुई। एग्जाइमर लेजर पर डॉ. गिराल्डिन जैन, अल्ट्रावायलट लाइट थैरीपी पर डॉ. सीआर श्रीनिवासन ने कई महत्वपूर्ण उपचार टिप्स दिए। सत्र का समापन दुनिया को अचंभित कर चुके व भारत में अब तक बहुत ही सीमित स्तर पर काम में लिए गए बायोलॉजिक्स उपचार व ट्रेकिंग के तरीकों पर व्याख्यान से हुआ। टार्गेटेड केमिकल थेरेपी, टीएनएफ एल्फा ब्लॉक मैथड, आईसी-17 ब्लॉकर्स की जानकारी भारतीय चिकित्सकों के लिए बहुत उपयोगी साबित हुई। दिल्ली के विशेषज्ञ डॉ. विनयसिंह के वीडियो डमोस्ट्रेशन से दवाइयों को इंजेक्शन के माध्यम से देने के विभिन्न तरीकों की जानकारी मिली। भारत में सोरायसिस की नई दवाइयों की स्थिति, उपलब्धता, सुलभता, नीतिगत स्थिति पर भी नए विचार आए।

डॉ. प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि कॉन्फ्रेंस के अंतिम दिन सार्क देशों के चिकित्सकों ने पांच सत्रों में त्वचा से संबधित सोरायसिस रोग के उपचार के आधुनिकतम तकनीकों, उपकरणों, माइक्रोबायोलॉजी के स्तर पर उपचार संबंधी जटिलताओं, चुनौतियों, अवसरों पर वीडियो प्रजेंटेशन दिए। विशेषज्ञों ने माना कि देश-काल और परिस्थिति के हिसाब से उपचार संबंधी विविधताएं तो हो सकती हैं मगर नई मेडिसिन के प्रयोग, संतुलित भोजन, योग, तनाव मुक्ति आदि उपाायों से इस बीमारी के खिलाफ सशक्त व निर्णायक लड़ाई लड़ी जा सकती है।

ओरल और इंजेक्टेबल मैथड्स पर पहला इंटरेक्टिव सेशन हुआ जिसमें एक घंटे तक एक्सपर्ट्स और डेलिगेट्स के बीच वैचारिक आदान-प्रदान हुआ। दूसरे सत्र में सोरायसिस में दी जाने वाली दवाइयों के दूसरी बीमारी की दवाइयों के साथ होने वाले 'इंटरेक्शन' पर चर्चा हुई। अल्ट्रा वायलट थैरपी के इस्तेमाल पर जोर दिया गया ताकि शरीर को किसी भी साइड इफेक्ट से बचाया जा सके। मेटाबोलिक सिंड्रोम्स के साथ सोरायसिस के एसोसिएशन को ध्यान में रखते हुए ट्रीटमेंट पाथ तय करने पर जोर दिया गया। तीसरे सत्र में बायोलॉजिक्स पर चर्चा हुई तो चौथे सत्र में डाक्टर व मरीजों के बीच वार्तालाप की अभिनय के माध्यम से दिलचस्प प्रस्तुति डॉ. नीरज पांडे लखनऊ व डॉ. सचिन वर्मा कोलकाता ने दी। साधारण भाषा में मरीज को समझाया गया कि सोरायसिस से डरने की जरूरत नहीं है, वह भी उपचार प्रक्रिया में भागीदार बनें तो परिणाम उम्मीद से ज्यादा अच्छे, असरकारी हो सकते हैं।

अंतिम सत्र में न्यूट्रीशियन, फिटनेस, विटामिन डी के प्रयोग पर चर्चा हुई व कहा गया कि केवल दवाइयों के भरोसे नहीं रहे। सोरायसिस कई बीमारियों को साथ लेकर आती है तो इससे लड़ने के लिए भी कई स्तरों पर सशक्त समन्वित प्रयासों की जरूरत है।

अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का एक और मुख्य आकर्षण पीजी क्विज रहा जिसमें उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जयपुर, कोटा, मुजफ्फरनगर, लखनऊ सहित कुल 16 टीमों ने हिस्सा लिया। आठ राउंड में कांटेदार टक्कर के बाद कमंड हॉस्पिटल लखनऊ ने बाजी मारी जिसे अतिथियों ने पुरस्कृत किया।

डॉ. प्रशांत अग्रवाल का सम्मान

कॉन्फ्रेंस में चर्म रोग चिकित्सा के क्षेत्र में उपचार संबंधी नवाचारों का सूत्रपात करने व नई अंतदृष्टि प्रदान करने पर कॉन्फ्रेंस के आर्गेनाइजिंग सेक्रेटरी उदयपुर के डॉ. प्रशांत अग्रवाल का सार्क-एडी की ओर से स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया गया।

राज्यपाल ने दो दीक्षान्त समारोहों में उपाधियां प्रदान कीं

पूर्व मंत्री मांगीलाल गरासिया को मिली पीएच.डी. की उपाधि

उदयपुर। कृषि विश्वविद्यालयों व वैज्ञानिकों को पैदावार बढ़ाने तक ही अपने को सीमित नहीं रखना चाहिए। बढ़ी हुई पैदावार का तब तक कोई लाभ नहीं है जब तक उस पैदावार का लाभकारी मूल्य किसान को ना मिले। अत: उद्योगों की ही भांति कृषि को भी बाजार के अर्थशास्त्र से जोड़ने का काम करना होगा। इसके लिए कृषि अर्थशास्त्र की स्मार्ट विधा को विकसित करना

चाहिए। यह बात राज्यपाल कल्याण सिंह ने महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के ग्यारहवें दीक्षान्त समारोह 22 दिसम्बर को कही।

विशिष्ट अतिथि गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले व उपाधि धारक विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ दी। उन्होंने कहा कि कृषि के विकास में महाराणा प्रताप का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने बताया कि पंडित चक्रपाणि मिश्र द्वारा रचित ग्रंथ 'विश्ववल्लभ' कृषि क्षेत्र मे विशेष जानकारी प्रदान करता है। इस पर वैज्ञानिक अनुसंधान करने की आवश्यकता है। दीक्षान्त समारोह में दिसम्बर, 2016 से 30 नवम्बर 2017 के दौरान योग्य पाये गये 792 विद्यार्थियों को उपाधिया एवं 38 वरीयता प्राप्त छात्र-छात्राओं को स्वर्ण पदक से सुशोभित किया गया। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा ने विश्वविद्यालय की विभिन्न उपलब्धियों, गतिविधियों व भावी कार्य-योजनाओं का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

23 दिसम्बर को आयोजित मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के 25वें दीक्षान्त समारोह में राज्यपाल कल्याण सिंह ने कहा कि मौजूदा दौर में राजनीति से लेकर सामान्य व्यवहार, भाषा एवं सम्भाषण में गिरावट चिंता का विषय है। उन्होंने भावी पीढ़ी में आत्मविश्वासपूर्ण, स्वच्छ, संयमित एवं विनम्र सम्भाषण कला विकसित करने के लिए विश्वविद्यालयों को अनिवार्य अतिरिक्त पाठ्यक्रम संचालित करने पर विचार करने की जरूरत बताई।

राज्यपाल श्री सिंह ने समारोह में कुल 202 गोल्ड मेडल व पीएचडी की उपाधियां प्रदान की। उन्होंने कहा कि सामाजिक समरसता के साथ-साथ रोजगार के क्षेत्र में भी विनम्र सम्भाषण कला की प्रमुख भूमिका है। सरकारी सहित निजी क्षेत्रों में रोजगार के लिए होने वाले साक्षात्कारों में कम्यूनिकेशन स्किल विकसित करने की दिशा में राज्यपाल ने सुखाड़िया विश्वविद्यालय को रोल मॉडल की भूमिका निभाने का आह्वान किया।

समारोह में उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी ने कहा कि राज्य में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के लिए सरकार संकल्पबद्ध होकर कार्य कर रही है। राजस्थान सरकार ने पिछले चार वर्षों में राज्य में 45 नये राजकीय महाविद्यालय खोले हैं। राज्य के शेष रहे 22 उपखण्ड मुख्यालयों पर भी महाविद्यालय खोले जाने के लिए सरकार प्रभावी पयास कर रही है। उन्होंने कहा कि राज्य के 100 महाविद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं के विकास के लिए 22 करोड़ की राशि रूसा से उपलब्ध कराई गई है।

समारोह में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष डॉ. बल्देव भाई शर्मा ने कहा कि देश में श्रेष्ठ चरित्र और सदाचरण से विश्वभर में मानव समुदाय को मनुष्यता का संस्कार देने की महती आवश्यकता है। उन्होंने सभी भेदभावों से ऊपर उठकर देश में सामाजिक समरसता का वातावरण तैयार करने की जरूरत बताई।

दीक्षान्त समारोह में प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कुलपति प्रो. जे.पी. शर्मा ने कहा कि विश्वविद्यालय छात्र हित में कई नवाचारों को अपनाते हुए अपनी साख कायम कर रहा है। उन्होंने समाज हित में सदैव संकल्पबद्ध होकर विश्वविद्यालय की श्रेष्ठतम सेवाओं का भरोसा दिलाया। समारोह में राज्यपाल के हाथों 57 गोल्ड मेडल एवं 145 दीक्षार्थियों को पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई जिनमें स्वर्ण पदक में 13 पुरुष तथा 44 महिलाएं और 75 पुरुष व 70 महिलाएं पीएच.डी. धारक बनीं।

ग्रामीण प्रतिभाओं को निखारने के लिए वंडर सीमेंट की पहल अनुकरणीय : कपिल

-डॉ. तुक्तक भानावत-

उदयपुर। अपने जमाने के हरफनमौला क्रिकेटर कपिलदेव रविवार को वंडर सीमेंट साथ-7 क्रिकेट महोत्सव के फाइनल मुकाबले के दौरान पत्रकारों से रूबरू हुए। कपिल ने कहा कि ग्राउंड लेवल पर वंडर सीमेंट के क्रिकेट की बेहतरी के लिए किए जा रहे इस भागीरथ प्रयास के सवाल पर कहा कि एक बच्चा जब टीवी पर क्रिकेट का मैच देखता है तो उसकी इच्छा होती है कि वह भी ग्राउंड में जाकर खेले। जब मौका मिलता है तो बहुत अच्छा लगता है। इतने बड़े लेवल पर टूर्नामेंट करना आसान नहीं है। काफी मुश्किलात भी आई होगी। पचास हजार के करीब खिलाड़ी यहां आकर खेलते हैं, उनको इकट्ठा करना, अंपायर, उनका रिकॉर्ड, सब कुछ करना बड़ा कठिन है लेकिन जब फील्ड में देखा तो बहुत ही खूबसूरत यात्रा है, मेरे हिसाब से दुनिया में कोई भी ऐसा टूर्नामेट नहीं होगा जहां पर 50 हजार लड़के-लड़कियों ने आकर टूर्नामेंट खेला होगा।

कपिल ने कहा कि तहसील व ग्रामीण स्तर पर यह प्रयास अच्छा लगा। लोग शहरों में बड़े-बड़े प्रोग्राम से पब्लिसिटी चाहते हैं लेकिन जब आप गांवों को शहरों के साथ जोड़ना शुरू कर देते हैं तो उस स्टेट की स्ट्रेंथ बढ़ जाती है। मुझे लगता है कि अवेयरनेस बढ़ी होगी, इससे आने वाले समय में बच्चों को बहुत फायदा होगा। किसके पास कितना टेलेंट है कोई नहीं जानता, जब तक मौका नहीं मिलता, पता नहीं चलता। तो इसलिए अच्छा लगा कि इतने बड़े पैमाने पर टूर्नामेंट किया जा रहा है।

क्रिकेट के लिए अपार पैसा चाहिए? सवाल पर कपिल ने कहा कि यह वंडर सीमेंट की हिम्मत है। लोग पब्लिसिटी करते हैं, बड़े-बड़े चैनल्स पर बड़ी-बड़ी संस्थाओं में मगर यहां पर बच्चों को गांवों-कस्बों से इकट्ठा करके लाना मुश्किल है। मुझे नहीं लगता है कि फाइनेंशली इतना असर होगा मगर यह सोच बड़ी है। आज वंडर सीमेंट ने किया है, बाकी संस्थाएं भी आगे आएं और ऐसे टूर्नामेंट और आगे बढ़ें। कल नई संस्थाएं आगे आएं फुटबॉल, हॉकी, कबड्डी सहित बाकी खेलों में भी तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा।

आप क्रिकेट से क्यों दूर हैं? सवाल के जवाब में कपिल ने कहा कि वे हमेशा से क्रिकेट से जुड़े हुए हैं। मगर साथ ही उन्होंने चुटकी ली कि अगर आप बुलाओगे नहीं, तो मैं जाउंगा नहीं। क्रिकेट में आए बदलाव पर बात करते हुए कपिल बोले कि अस्सी के दशक से आज के क्रिकेट में बहुत बड़ा बदलाव आया है। अब पैंतीस गैंदों में शतक लग जाता है, यह बहुत बड़ा बदलाव है । आज बच्चों में बहुत कॉन्फिडेंस है। हम जिस टेलेंट की बात करते हैं वह सामने उभर कर आ रहा है। इंडियन क्रिकेट का आज दुनियाभर में सम्मान पा रहा है और हमारी टीम के रिजल्ट भी अच्छे आ रहे हैं।

टी-ट्वंटी में तिहरे शतक की उम्मीद के सवाल पर कपिल ने कहा कि क्यों नहीं लगेगा, तिहरा शतक? हमें तो उम्मीद है कि एक खिलाड़ी 400 रन भी बनाएगा। पहले एक दिन में 280 रन बनते थे। रफ्तार बहुत तेज हो गई है और शायद इसीलिए रिजल्ट भी ज्यादा आने शुरू हो गए हैं। पाकिस्तान के साथ मुकाबले के दौरान खिलाड़ियों के सेंटिमेंट्स और प्रेशर के सवाल पर कपिलदेव का जवाब था कि पाकिस्तान के सामने जब इंडियन टीम उतरती है तो जितना प्रेशर आमजन महसूस करता है उतना ही हम खिलाड़ी भी महसूस करते हैं। हम लोगों से अलग नहीं हैं। कपिल ने उम्मीद जताई कि इंग्लेण्ड ऑस्ट्रेलिया व साउथ अफ्रीका में भारतीय टीम जीत के सूखे को खत्म करेगी। आने वालों दिन अच्छे होंगे। कौनसा खिलाड़ी बेहतरीन प्रदर्शन कर रहा है? सवाल पर कहा कि कोई भी किसी से बहेतर या कमजोर नहीं कह सकता। अगली जनरेशन बेहतर नहीं होगी तो दुनिया आगे नहीं बढ़ पाएगी। आज इन्होंने किया है तो कल और बेहतर करना है, यही सोच क्रिकेट को आगे बढ़ाएगी।

दलाई लामा सम्मानित

उदयपुर। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के साथ कुतुबी जुबली छात्रवृत्ति कार्यक्रम ने नई दिल्ली में इंटरफेथ सम्मेलन का आयोजन किया। आईडियाज़ ऑफ हारमोनियस को-एक्जीसटेंस: रिलीजियस एंड फिलोसोफीज़ ऑफ इंडिया शीर्षक से आयोजित इस सम्मेलन का उद्देश्य सांप्रदायिक सौहार्द के सिद्धांत और प्रथाओं का पता लगाने के लिए विद्वानों और सामुदायिक नेताओं को एक साथ लाने के लिए किया गया।

सम्मेलन का यह दूसरा सत्र है, जो पूरे विश्व से विद्वानों को एक मंच पर लाता है। इसमें लंदन, इज़राइल, संयुक्त राज्य अमेरिका, तुर्की, भारत, पाकिस्तान और अन्य देश शामिल हैं। शैक्षिक विद्वानों के अतिरिक्त सम्मेलन में भारत में प्रमुख धर्मों के धार्मिक नेताओं और संगठनों के जमीनी स्तर के नेताओं के साथ एक विशेष पैनल की मेजबानी भी की गयी जिन्होंने समुदायों के बीच शांतिपूर्ण पुल बनाने के प्रयास किए हैं। इस तरह के प्रयासों को प्रोत्साहित करने के लिए कुतबी जुबली स्कॉलरशिप कार्यक्रम द्वारा तकरीब 10,000 यू.एस. डॉलर का पुरस्कार शुरू किया। यह पुरस्कार सैयदना ताहिर फखरुद्दीन टस के निर्देशन और उदार निधि में शुरू किया जो शांति और सामंजस्य में लोगों को एक साथ लाने के प्रयासों को प्रोत्साहित करता है। दाऊदी बोहरा समुदाय के प्रमुख सैयदना तेहर फरखरूद्दीन ने दलाई लामा को पहले तकरीब पुरस्कार से सम्मानित किया।

हंसलता चौहान को पीएच.डी.

श्रीमती हंसलता चौहान ने मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय से 23 दिसम्बर को 25वें दीक्षान्त समारोह में राज्यपाल श्री कल्याणसिंह से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। उनके शोध का विषय मेवाड़ के लोकव्रतों के कथाचित्रों का समीक्षात्मक अध्ययन था।

उनकी निर्देशिका डॉ. कहानी भानावत ने बताया कि हंसलता ने अपनी शोध के दौरान कई व्रतार्थी महिलाओं तथा पुरुषों से भेंट कर अपने अध्ययन को पुख्ता बनाया। अध्ययन का यह निष्कर्ष रहा कि लगभग सभी व्रत कथाओं में चित्रांकन का प्रभाव रहा है। ये चित्रांकन दीवाल पर कुंकुम, सिंदूर, काजल, हल्दी, गोबर तथा घी आदि की सहायता से बड़े ही कलात्मक और चित्ताकर्षक ढंग से बनाये जाते हैं। ये चित्र थापा नाम से जाने जाते हैं। इनमें दशामाता, शीतला सप्तमी, गणगौर, नागपंचमी, दीयाड़ी नम, रामनवमी, सरवण, छठी पूजन, वट सावित्री, दीवाली, गणेश चतुर्थी, हड़तालिका तीज, श्राद्ध में सांझी आदि अनेक व्रतानुष्ठानों के अवसर पर व्रतार्थी महिलाओं द्वारा कोरे जाते हैं। हंसलता ने बड़े परिश्रम और मनोयोग से अपने को भागीदार बनाते हुए इस अध्ययन को संवारा है जो सबके द्वारा सराहा गया है।

राजकुमार जैन 'राजन' सम्मानित

नई दिल्ली। 'टूडे न्यूज चैनल' एवं 'आरोग्य दर्पण' पत्रिका के तत्वावधान में नई दिल्ली में आयोजित समारोह में विभिन क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर साहित्यकार राजकुमार जैन 'राजन' को 'भारत गौरव सम्मान' से विभूषित किया गया। यह सम्मान इन्हें राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट लेखन, प्रकाशन, संपादन, तथा बाल साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान हेतु प्रदान किया गया। सम्मान पूर्व केंद्रीय मंत्री व जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष शरद यादव, रामप्रकाश वर्मा व अन्य अतिथियों ने प्रदान किया।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।